

ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 3, सितम्बर, 2014 (मासिक),
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये



1. नई दिल्ली - भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्रता प्रणव मुखर्जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी। साथ में ब्र.कु. नीलू बहन तथा ब्र.कु. आशा बहन। 2. नई दिल्ली - भारत के प्रधानमंत्री भ्रता नरेन्द्र मोदी को राखी बाँधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी। साथ में ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. वृजमोहन भाई एवं अन्य।



1. **जगन्नाथ पुरी**- जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी को राखी बाँधते हुए ब्र. कु. अनुपमा बहन। 2. **वाराणसी** - शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानन्द सरस्वती जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. सुरेन्द्र बहन। 3. **लेह-लद्दाख**- बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र. कु. विनी बहन। 4. **ज्ञान सरोवर (आनू पर्वत)**- जल परिवहन, विमानन एवं पर्यटन सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन 'ज्वाय ऑफ लाइफ' का उद्घाटन करते हुए ब्र. कु. मीरा बहन, त्रिनिडाड में भारतीय उच्चायुक्त भ्राता गौरी शंकर गुप्ता, राजस्थान पर्यटन विभाग के निदेशक भ्राता भानु प्रताप सिंह, ब्र. कु. कमलेश बहन एवं अन्य। 5. **ज्ञान सरोवर (आनू पर्वत)**- यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन 'गति, सुरक्षा और आध्यात्मिकता' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ईस्ट कोस्ट रेलवे के मुख्य वाणिज्य अधिकारी गगन मोहन त्रिपाठी, ब्र. कु. दिव्य प्रभा बहन एवं अन्य। 6. **लखनऊ**- उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता राम नाइक को राखी बाँधते हुए ब्र. कु. राधा बहन। 7. **कोलकाता**- पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता केशरीनाथ त्रिपाठी को राखी बाँधते हुए ब्र. कु. कानन बहन। 8. **पूणे**- महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम भ्राता के. शंकरनारायणन को राखी बाँधते हुए ब्र. कु. रुपा बहन। 9. **चैन्नई**- तमिलनाडु के राज्यपाल महामहिम भ्राता के. रोसेय्या को राखी बाँधते हुए ब्र. कु. कलावती बहन। 10. **त्रिवेन्द्रम**- केरल का राज्यपाल महामहिम बहन शोला दीक्षित को राखी बाँधते हुए ब्र. कु. मिनी बहन। 11. **कटक**- उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता अमिताव रॉय को राखी बाँधते हुए ब्र. कु. सुलोचना बहन।

मौत को कैसे जीता जाये ?

जिस कलियुगी लोक में अब हम रह रहे हैं, उसे 'मृत्युलोक' कहा जाता है। इस लोक का कोई भी प्राणी ऐसा नहीं जो मौत के मुँह में न आता हो। हाँ, मौत का कारण भिन्न-भिन्न हो सकता है। यहाँ मृत्यु के समय का कोई भरोसा नहीं। वृद्ध माता-पिता के देखते ही देखते काल उनके बच्चों को ग्रास बनाकर चला जाता है। प्रत्यक्ष है कि यहाँ मनुष्य को मौत पर विजय प्राप्त नहीं है।

यहाँ हर-एक जीव मौत से घबराता है और उससे मुक्ति पाना चाहता है। यहाँ खाना-पीना, सोना-जागना इत्यादि प्रत्येक क्रिया जीवन को स्थिर रखने के लिए अर्थात् मृत्यु से बचने की इच्छा से होती है। प्रत्येक मनुष्य चाहता है, 'मैं अमर हो जाऊँ' या मैं फिर कभी 'जन्म-मरण में न आऊँ।'

प्रश्न यह है कि मौत से मनुष्य भयभीत क्यों होता है? इसके कई कारण हैं, जीवनकाल में जिस मनुष्य ने पाप-विकर्म किये हैं, वह उनके परिणामस्वरूप दण्ड (दुख) से भयान्वित होता है। अज्ञानी मनुष्य को भी भय रहता है कि मालूम नहीं मरने के पश्चात् कहाँ जाऊँगा, मेरी क्या गति होगी? सारा जीवनकाल विषय-विकारों की याद में व्यतीत करने के

कारण मरते समय मनुष्य का मन तो स्थिर होता नहीं अतः आत्मा विषय-विकारों की याद में तड़प-तड़प कर प्राण छोड़ती है। वह सोचता है कि अभी जो धन-दारा, पुत्र-पौत्र, सुख-सम्पत्ति, महल-माड़ियाँ हैं, जिनकी प्राप्ति में मैंने जीवन लगा दिया, मरने पर उनका उपयोग न कर सकूँगा, अमुक-अमुक वस्तुएँ सेवन कर मुझे तृप्त होना था पर मेरी यह तृष्णा अब पूर्ण न हो सकेगी। अभी तो मुझे अमुक-अमुक व्यक्ति याद करते, प्यार देते तथा मेरी उपयोगिता समझते थे परन्तु मरने के बाद तो मेरी याद और मेरा नाम ही मिट जायेगा। इसलिए मनुष्य मौत और मौत की याद से दुखी होता है।

यदि मनुष्य का बुद्धियोग स्थिर हो, देह के अनेक सम्बन्धियों और विषयों की याद में न भटके तो उसे मौत और उसकी याद दुखद नहीं लगेंगे। यदि मनुष्यात्मा देही-भाव में टिकना जाने तो शरीर छोड़ते समय उसे कष्ट नहीं होगा। अतएव मौत को जीतने का अर्थ हुआ जीवन-मुक्त देवपद पाना क्योंकि देवता अमर गाये जाते हैं, उनका जन्म दुखमय नहीं होता, वे स्वरूपस्थित होते हैं और उनको कोई भी वस्तु अप्राप्त नहीं होती। ❖

◆ कर्मों का खाता - 3	
(सम्पादकीय).....	4
◆ स्वर्ण जयन्ती की.....	6
◆ 'पत्र' संपादक के नाम	7
◆ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..	8
◆ ईश्वरीय कारोबार में	10
◆ दिलाराम ने खोले	13
◆ तीव्र तपन से क्या सीखें हम? ..	14
◆ ज्ञानामृत (कविता)	14
◆ सच्ची सुंदरता	15
◆ बेफ़िकर बादशाह	16
◆ मेरा तो घर.. (कविता)	17
◆ बाल मनोविज्ञान	18
◆ नवरात्रि का आध्यात्मिक	21
◆ रंग अलग लेकिन रंगत एक ..	23
◆ बन्दर, बच्चा और	25
◆ हजारों भुजाओं वाले बाबा ...	26
◆ ज्ञानामृत पढ़कर	27
◆ सचित्र सेवा समाचार	28
◆ सार्वभौमिक बंधुत्व	30
◆ सचित्र सेवा समाचार	32
◆ गहराता मूल्य संकट	33
◆ मेरे प्यारे भारत (कविता)	34

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

ईश्वरीय शक्तियों और
वरदानों से भरपूर अनेक
मनभावन शक्तियाँ
ज्ञानामृत कार्यालय में प्राप्त
हुई हैं। इन्हीं प्रेषण बहनों
की हार्दिक आभार और
दिल की दुआयें!

कर्मों का खाता – 3

कहा गया है, लोभ पाप का बाप। आज के समय में लोभवश बहुत पाप हो रहे हैं। उपभोग के नाम पर हम भोगों के गुलाम बनते जा रहे हैं। कहते हैं कि एक धनी राजकुमार महात्मा बुद्ध के पास पहुँचा और प्रश्न किया, भन्ते, यह बताएँ कि मनुष्य को साधनों का उपभोग कैसे करना चाहिए जिससे उसमें संग्रह की प्रवृत्ति भी न पनपे और आवश्यकताएँ भी पूर्ण होती रहें। महात्मा बुद्ध बोले, मनुष्य को अल्प, सुलभ और निर्दोष – इन तीन व्रतों का पालन करते हुए उपभोग करना चाहिए। अल्प का अर्थ है जितने कम में हमारी आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाएँ, सुलभ का अर्थ है, दुर्लभ और अत्यधिक मूल्यवान का उपभोग न करें, निर्दोष का अर्थ है, उपभोग में लाई जाने वाली वस्तु दोषों से रहित अर्थात् ईमानदारी, परिश्रम और सदाचार से प्राप्त की गई हो। जो व्यक्ति इन व्रतों का निष्ठापूर्वक पालन करता है वह कर्मों को करता हुआ भी उनसे न्यारा रह सकता है।

कर्म की लगाम रखें हाथ में

मानव कर्म करते-करते उसके प्रभाव में आ जाता है। जैसे हम घोड़े पर चढ़ते हैं, लगाम अपने हाथ में रहे तो ठीक, नहीं तो घोड़ा ही हमें जहाँ

चाहे खींच ले जाता है। इसी प्रकार कर्म भी एक प्रकार का घोड़ा है, हम कर्म रूपी घोड़े के मालिक हैं परन्तु फिर भी वह हमें खींच ले जाता है। बुरे कर्म तो त्याज्य हैं ही, सत्कर्म की लगाम भी अपने हाथ में रहनी चाहिए नहीं तो उसमें अहंकार, आसक्ति आदि आने की सम्भावना है। केवल प्रायश्चित्त से कर्म-बन्धन नहीं छूटता। यह दृढ़ संकल्प हो कि ऐसा बुरा कर्म हमसे फिर कभी ना हो। जो बुरा हुआ उसके बदले 100 गुणा अच्छा कर्म करना है। यदि बुरे का बुरा परिणाम निकले तो उसे समभाव से चुक्ता करना है।

औषधि की तरह ग्रहण करें कर्मफल को

यदि कर्म को अनासक्त भाव से, न्यारे और साक्षी होकर भोग लिया तो वह आगे और फल नहीं देगा। भविष्य में फिर नहीं बांधेगा। नहीं तो कर्मफल में आसक्ति से पुनः कर्मबन्धन, उस कर्मबन्धन से पुनः कर्मफल और पुनः उसमें आसक्ति से पुनः कर्मबन्धन – यह दुष्चक्र चलता रहेगा। कई लोग महफिल लगाकर शौक से शराब पीते हैं और दूसरा व्यक्ति कड़वी दवा को डॉक्टर की राय से पीता है। दोनों के पीने में अन्तर है। एक पीने में आसक्त

है, बार-बार पीना चाहता है, दूसरा रोग-निवारण की मजबूरी से, अनासक्ति से पीता है। समझदार व्यक्ति कर्मफल को आवश्यक औषधि की तरह ग्रहण करता है, वह दुख-सुख को भोगता नहीं बल्कि उनसे न्यारा रहता है। वह रमता नहीं, साक्षी होकर पास करता है और भार हलका कर लेता है। कर्मबन्धन के दुष्चक्र से बाहर आने का मार्ग यही है।

कर्म का फल देना, कर्म का समापन है

कर्म का फल सामने आना एक प्रकार से किए हुए कर्म का समापनकाल है। जैसे गोभी का फूल निकला, उसके बाद पौधे का क्षय होना निश्चित है। कर्म तो समापन की ओर है पर हम उसकी राख में से वैसे ही दुखदाई नए अंकुर उपजाने के लिए उस कर्मफल में लिप्त हो जाते हैं, उस के प्रकट होने पर सुखी या दुखी हो जाते हैं, यह सबसे बड़ा अज्ञान है। जैसे शरीर को जब रोग आता है तब परहेज से रहेंगे तो जल्दी रोग चला जाएगा पर यदि सोचेंगे कि दाल-रोटी खाने की इच्छा नहीं हो रही, कुछ चटपटा खाऊँ तो रोग बैठ जाएगा। इन्द्रियों को नियन्त्रण में रखा तो रोग गया, इन्द्रियों के नियन्त्रण में रहे तो

रोग बैठ गया। इसी प्रकार कर्मफल के समय इन्द्रियों को वश में रखा तो कर्म, फल देकर नष्ट हो गया। यदि इन्द्रियों के वश हो गए तो कर्मफल में से नवीन कर्मबन्धन जुट जायेगा।

भुगतना अर्थात् कर्मों का भुगतान करना

जब हम बाज़ार से कोई चीज़ खरीदते हैं तो उसकी कीमत का भुगतान (Payment) करते हैं। भुगतान का अर्थ है जो वस्तु खरीदी गई थी उसका हिसाब चुक्ता हो गया है। भुगतान शब्द का ही मिलता-जुलता शब्द हम व्यवहार में भी प्रयोग करते हैं। मान लीजिए, कोई व्यक्ति हमें परेशान या बोल्लिल या दुखी कर रहा हो तो मुख से निकलता है, इसे कब तक भुगतना है या फिर कहते हैं, हे भगवान, अब यह और नहीं भुगता जा सकता, इससे पीछा छुड़ाओ। यहाँ भुगतने का अर्थ है सहन करना। सहना भी एक प्रकार से कार्मिक हिसाब-किताब को चुक्ता करने का तरीका है। कब तक भुगतने का अर्थ है कब तक सहना है? इसका उत्तर है, जब तक कर्म का कर्ज उतरे तब तक अपने कर्मों द्वारा उसका भुगतान करते जाना है। लेकिन जैसे कोई कर्ज उतरता है तो कर्जदार को खुशी होती है कि मेरा भार उतर रहा है। उसे ज्ञान रहता है कि पहले लाख रुपये थे कर्ज के, अब मात्र 20 हजार बचे हैं, इस ज्ञान से उसे खुशी होती है। हमें भी जब

यह ज्ञान हो जाता है कि हमारे 63 जन्मों के कर्म कट रहे हैं तो दुख की परिस्थिति में भी, तीनों कालों का ज्ञान होने के कारण, हल्का होने, कर्ज उतरने की खुशी होती है। यदि हम केवल एक काल में जीते हैं अर्थात् वर्तमान में जीते हैं तो वर्तमान के दुख-सुख के अधीन हो जाते हैं। यदि आत्मा के तीनों कालों की स्मृति में रहते हैं तो वर्तमान को साक्षी होकर देखते हैं और प्रसन्नचित्त रह पाते हैं।

अंकुश शरीर पर नहीं, मन पर

कई लोग सोचते हैं, कर्म ही ना करें तो कर्मबन्धन बांधेगा कैसे? पर कर्म का त्याग सम्भव कैसे होगा? खाना, पीना, कमाना, सुनना, सुनाना बन्द कर देंगे पर मन का व्यापार तो फिर भी चलता रहेगा। वास्तविक कर्मबन्धन तो मन की रजोगुणी और तमोगुणी सोच से ही बनता है। इसलिए शरीर पर अंकुश नहीं, मन की तमोगुणी वृत्तियों पर अंकुश चाहिए। भगवान शिव कहते हैं, अपनी वृत्ति, दृष्टि, कृति को बेहद की बनाओ। आत्माओं प्रति रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ दो। अब हृद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव-संस्कार में समय नहीं गंवाओ। दृढ़ संकल्प का दीप जलाओ। इन्द्रियों का दमन नहीं, इन्द्रियों का संयम साधो।

विपरीत परिस्थिति में गुणों को कसकर पकड़ें

कई लोग कहते हैं कि हम ईमानदार, सच्चे और मेहनती बनना

तो चाहते हैं परन्तु हमारी हँसी उड़ाई जाती है, ताने सुनने को मिलते हैं, किसी का सहयोग नहीं मिलता, फिर इन गुणों को धारण करने का उमंग फीका पड़ जाता है। मान लीजिए, हमने धूप में गेहूँ सूखने के लिए डाले और इतनी देर में बरसात आ गई तो हम गेहूँ समेटते हैं ना। यह तो नहीं कह देते कि मैं क्या करूँ, बरसात हो गई, मैं तो सूखाना चाहता था, मेरी क्या गलती है, आप बरसात को रोको। हम ऐसा कभी नहीं कहेंगे। हम जानते हैं, प्रकृति पर हमारा कोई ज़ोर नहीं चलता। हम उसे नहीं बदल सकते हैं, हाँ, अपने को बदल सकते हैं और हर बार अपने को ही बदलते हैं। कड़ी धूप में छाता लेते हैं, ठण्ड में शाल, स्वेटर लेते हैं और कितने ही वर्षों से इस तरह से अपना परिवर्तन करते आ रहे हैं।

जिस तरह बाहरी प्रकृति है इसी प्रकार मानव की आन्तरिक प्रकृति (स्वभाव) भी है। उस प्रकृति के वश यदि कोई कुछ गलत कर रहा है तो क्या उससे हम अपना नुकसान होने दें? या जैसे हमने गेहूँ समेट कर उनका बचाव कर लिया इसी प्रकार हम अपना भी बचाव कर लें। हम दूसरे की प्रकृति को नहीं बदल सकते पर अपने स्वभाव को तो बदल सकते हैं ना। अतः परिस्थितियों के झोंके चाहे कैसे भी हों, हमें अपने कर्मों को बिगड़ने से बचाने का सदैव ध्यान रखना है। यह कार्य हमें ही करना है।

अन्य कोई हमारे लिए यह नहीं कर सकता।

जैसे तेज ठण्डी हवा आ रही हो तो हम अपनी ओढ़ी हुई चद्दर को नहीं उड़ जाने देते, उसे और ज़ोर से कसकर पकड़ लेते हैं, इसी प्रकार परिस्थितियों की आंधी आने पर अपने आन्तरिक गुणों रूपी चद्दर को और ज्यादा कसकर पकड़े रहो। यह नहीं कहो कि कोई सहयोग नहीं देता।

चद्दर को ओढ़े रहने में किसी ने सहयोग दिया क्या? खुद ही कसकर पकड़ा ना। गुणों को भी कसकर पकड़े रहिए। याद रखिए –

कहना नहीं प्रभु से कि समस्या विकट है।
कह दो समस्या से कि प्रभु मेरे निकट है।।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

स्वर्ण जयन्ती की शुभ कामनायें



इस वर्ष हम ज्ञानामृत पत्रिका की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं। शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा संकल्प किया कि ऐसी पत्रिका से लाखों आत्माओं का कल्याण होगा। मेरा परम सौभाग्य है कि दिल्ली कृष्णा नगर में रहते आत्म भाई ने वहीं इसकी छपाई की मशीनें स्थापित कीं। पत्रिका ने दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए इन 50 वर्षों में करोड़ों मनुष्य आत्माओं तक ईश्वरीय संदेश पहुँचाया है।

जैसे बापदादा की महिमा अपरंपार है वैसे ज्ञानामृत पत्रिका की महिमा भी अपरंपार है। इस पत्रिका से सभी को लाभ होता है, प्रेरणा मिलती है जिससे अपने जीवन का परिवर्तन करते हैं। जैसे वाह बाबा वाह! कहते हैं, वैसे वाह ज्ञानामृत वाह! कह सकते हैं। इस सफलता के लिए आत्म प्रकाश भाई, उर्मिला बहन तथा समस्त ज्ञानामृत परिवार को बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

– ब्र.कु. दादी कमलमणि,
सबजोन इंचार्ज, कृष्णा नगर, दिल्ली



जैसे ही ज्ञात हुआ कि यह ज्ञानामृत पत्रिका का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। आँखों के सामने किसी चलचित्र की भाँति अतीत के दृश्य दिखने लगे मानो कल की ही बात हो। 'त्रिमूर्ति' नाम से आरंभ हुई यह पत्रिका बाद में ज्ञानामृत के नाम से विख्यात हुई।

मेरे लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। जैसे ही प्राप्त होती है, इसे पूरा पढ़े बिना मन बेचैन रहता है। मैं अनुभव के साथ यह कहना चाहूँगी कि यह हर घर में, हर व्यक्ति के पास पहुँचनी चाहिए क्योंकि इसमें ज्ञान के साथ-साथ कमज़ोरियों पर विजय प्राप्त करने की अनोखी शक्ति समाहित है और यह जीवन जीने की कला भी सिखाती है।

इसी प्रसंग में मैं कहना चाहूँगी कि ज्ञानामृत हर भाषा-भाषी को मिले। यही कारण है कि हमने उड़िया भाषा में 'ज्ञान दर्पण' के नाम से इसे प्रकाशित कराना प्रारंभ किया ताकि बाबा का ईश्वरीय संदेश जन-जन तक पहुँच सके।

ज्ञानामृत की स्वर्ण जयन्ती पर इसकी अद्भुत सेवाओं के लिए आत्म प्रकाश भाई, उर्मिला बहन एवं समस्त ज्ञानामृत परिवार को हृदय की कोटिशः बधाइयाँ देती हूँ और शुभकामना करती हूँ कि यह पत्रिका दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करे।

– ब्र.कु. कमलेश, सबजोन इंचार्ज, कटक, उड़ीसा



‘पत्र’ संपादक के नाम

‘ज्ञानामृत’ पढ़ने से डिप्रेशन से उबरने में बहुत मदद मिलती है, मन को ताज़गी का अहसास होता है, आत्मा की सुषुप्त शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं, मन मजबूत हो जाता है जिससे संसार की किसी भी परिस्थिति का सहज सामना करने में सफल होते हैं।

— ब्रह्माकुमार अनिल,
श्रीरामपुर रोड, शाहगंज

‘ज्ञानामृत’ की नियमित पढ़ाई से स्कूल में भाषण करने में मदद मिलती है और कई प्रश्नों के उत्तर कई अंकों से मिलते हैं। कोई आत्मा टेन्शन में दिखती है तो उसे ज्ञानामृत देकर खुशी की लहर में लाता हूँ।

— कल्याणकर मल्हारी बापू,
प्रधानाचार्य, बनपुरी, सांगली

मई अंक का पहला ही लेख संजय की कलम से ‘मधुर बनो’ मन को छू गया। मधुर बनने की श्रीमत सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा दे रहे हैं। यह न जानने के कारण आज एक-दूसरे से नफरत है। आदरणीया दादी जानकी जी ने कहा, सदा एवररेडी रहने और ‘हाँ जी’ के पार्ट के लिए सेकेण्ड में साइलेन्स में जाओ, न बीती बात, न आने वाली बात, कोई चिन्तन नहीं, मन खाली है।

ज्ञानामृत के प्रत्येक लेख से आत्मबल और जीवन जीने की कला मिलती है।

— ब्रह्माकुमार जय प्रकाश गुप्ता,
एडवोकेट, उच्च न्यायालय,
इलाहाबाद

मई अंक में ‘कमी को गुण में बदलो’ पढ़कर मन प्रसन्न हुआ। कमजोरी को चाहिए सहानुभूति, न कि नफरत। मैं ‘गिरे हुए को उठाओ और मदद करो’ के सिद्धांत पर कार्य कर रहा हूँ।

“ज्ञानामृत से मिला हमें प्रकाश,
बाबा का मिला आशीर्वाद,
यह सफर चलता रहे निरंतर,
ख्याति हो विश्व में परिवर्तन की,
बदल दें अपने विचार सभी”

— सुनील कुमार दाधीच,
वरिष्ठ अध्यापक, बुन्दी (राज.)

‘ज्ञानामृत’ का हर लेख दैवी बुद्धिवान बनाने वाला है। रोग, शोक, भय, चिन्ता से मुक्त करने वाला है। ईश्वरीय प्रेम सिखाने वाला है। रमेश भाई का लेख यज्ञ इतिहास और जानकी दादी का लेख ईश्वरीय मार्ग पर चलने की विधि बताने वाला है। सम्पादकीय लेख रूहानी सौन्दर्य बनाने का मार्गदर्शक है।

— ब्रह्माकुमार वृजविहारी,
टिकैतगंज, बाराबंकी (उ.प्र.)

‘ज्ञानामृत’ आत्मा की पिपासा को शान्त करने की वह कड़ी है जिससे हम घर बैठे शान्ति का अनुभव करते हैं। सुन्दर, ज्ञानवर्धक, सारगर्भित लेखों द्वारा पोषक आहार की प्राप्ति होती है। पत्रिका गागर में सागर भरती है। इसकी प्रशंसा, रवि को दीपक दिखाना है।

— अंजली प्रफुल्ल खले, रतलाम

‘ज्ञानामृत’ के द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि हुई है। मानसिक शान्ति प्राप्त करने की दिशा में प्रगति हुई है। गुणों में भी वृद्धि हुई है। क्रोध और तनाव नैचुरल नहीं हैं, इस वास्तविकता का ज्ञान हुआ है। अब जीवन सुखमय हो गया है।

— विजेन्द्र पाल सिंह, एडवोकेट,
दौगला, मेरठ (उ.प्र.)

ज्ञान-योग के साथ ‘ज्ञानामृत’ के नियमित पठन-पाठन से मुझमें अटल कन्द्रोलिंग पावर का सृजन हो गया है जिसकी बदौलत बुरा सोचने, बोलने, देखने तथा करने की आदत मृतप्रायः हो गयी है। ज्वलंत उदाहरणों के लेख पाठकों में व्याप्त विकारों को दूर कर दैवीगुण अपनाने में आधार का काम करते हैं। दिव्य बुद्धि से विभूषित दादी जानकी जी के सटीक उत्तर मन को सन्तोष से भर देते हैं। सन्तुलित एवं मिश्रित विषयों के चुनाव के लिए सम्पादक मण्डल धन्यवाद का पात्र है।

— ब्रह्माकुमार अजीत भाई,
सेवानिवृत्त अभियन्ता प्रमुख, पटना



प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

— सम्पादक

प्रश्न:- अमृतवेला अच्छा हो उसके लिए क्या करें?

उत्तर:- बाबा के महावाक्यों के अनुसार ही यह जीवन-यात्रा बीते, कभी भी कोई घड़ी निष्फल न जाये, नहीं तो अच्छी नहीं रहेगी जीवन-यात्रा। मैं याद की यात्रा पर हूँ, ऐसी याद हो जो पीछे न देखें। याद की यात्रा माना याद में रहना, चलते चलना, पीछे न देखना, पयूचर का फिक्र नहीं करना। एक बल, एक भरोसा माना भरोसे से बल मिलता है। हो जायेगा, बाबा बैठा है, यह भरोसा है। भावना का भाड़ा मिलता है, निश्चय में विजय है। बाप के संग से ही हम आगे चले हैं और हम बच्चों का भी आपस में संग है। सेवा भी आपस में मिल करके करते हैं तो उसका भी बहुत बल है। संग में रहना है सेवा के निमित्त, बाकी सारा दिन मैं क्या करती हूँ? मुझे पास विद ऑनर में आना है, अच्छी मार्क्स लेनी हैं, यह ध्यान रखना है। दिनभर में जो कुछ भी हुआ रात को एकदम समेट के सोयेंगे तो अमृतवेला अच्छा

होगा। रात को कोई न्यूज़ देखके या अखबार पढ़के सोयेंगे तो क्या होगा? इसलिए रात को बाबा को सब सुनाके, अपने ऊपर दया, कृपा, रहम करके सो जाना है। अपने ऊपर दया करने से बहुतों से आशीर्वाद मिलेगी। बाबा की कृपा से सुख घने पायेंगे। ऐसे रहमदिल बाबा को बहुत याद करना है, आपस में अच्छी तरह से मिलो, बाबा की अच्छी-अच्छी बातें सुनाओ और सुनो।

प्रश्न:- पुरुषार्थी जीवन में सबसे बड़ी कमी कौन-सी है?

उत्तर:- जिसको पक्का योगी बनना हो तो कभी किसी की कोई कमी न देखे। थोड़ी भी किसकी कमी देखी तो पक्का बनने नहीं देगी। कमी देखना और सुनना या बोलना, यह आदत हमको सम्पन्नता के समीप नहीं ले जा सकती है। अभी बाबा हमको बड़ा स्नेह देते हैं इसलिए सम्पन्न बनना इजी लगता है। कोई चाहे तो बाबा के स्नेह की शक्ति से, अपने को सम्पन्न बना सकता है। कमी देखने से होगा क्या?

और ही वेस्ट थॉट चलेंगे इसलिए सब बहुत अच्छे हैं।

प्रश्न:- आपने “थिंक लेस, डू मोर (सोचो कम, करो ज्यादा)” विषय पर भाषण में क्या सुनाया?

उत्तर:- किसी भी प्रकार की ज़रा भी सोच (चिन्ता) में होंगे तो हमारी वृत्ति, दृष्टि बाबा समान नहीं हो सकती है। इतना सब ठीक हो गया है तो आगे भी सब ठीक होगा ही, अन्दर से यह विश्वास सोचने नहीं देता है। बाबा में विश्वास, ड्रामा का हर दृश्य कल्याणकारी है, इसमें विश्वास है। सारे जीवन में मैंने समय, पैसा, शक्ति व्यर्थ नहीं गंवाया है, तो भगवान खुश, हमारी दादियाँ भी खुश तो हमारे सेवासाथी भी खुश, सब मेरे से खुश, वह शक्ति काम कर रही है। थिंक लेस से सोल एनर्जी बढ़ती है। ज्यादा क्या सोचना है, आपने कहा, मैंने माना, आपस में सम्मान है ना। आज योग नहीं लगा, आज यह काम नहीं हुआ, मुश्किल है, ये शब्द मुख से निकलें, अफसोस है। नहीं, सब सहज

है। हम जितना बाबा की बातों पर अटेन्शन रखते हैं उतना बाबा भी हमारा ध्यान रखता है, उतना पौ-बारा है। पौ-बारा माना अच्छे स्टूडेंट बन, अच्छी स्टडी कर टीचर का ध्यान अपने ऊपर खिंचवाना, पर्सनल ऐसा हमारा जीवन हो। बाबा देखते हैं कि इसका ध्यान अपने ऊपर अच्छा है। तो बाबा चारों सबजेक्ट में साथ देता है। ज्ञान बाबा का दिया हुआ है, और कहाँ से लाया नहीं। यह ज्ञान जब तक मंथन न करूँ ना, तो लगेगा जैसे रूखी-सूखी रोटी खा ली। ज्ञान इतना अच्छा है जिससे योग लग जाता है। धारणा जीवन में आपेही आ जाती है, सेवा हो जाती है। तो ज्ञान मंथन की बहुत वैल्यू है। मंथन करने में, सोचने की थोड़ी भी ज़रूरत नहीं है। इसमें सबका सहयोग अच्छा मिल रहा है तो सब काम अति सहज हो रहे हैं।

प्रश्न:- कहीं जाना होता है तो उसके लिए कुछ तैयारी तो करनी पड़ती है ना, तो उसमें कैसे कह सकते हैं कि डोंट थिंक?

उत्तर:- अगर मेरे को सोचने की आदत होती ना तो मेरे जितनी कोई यात्रा कर न सके। समेटने और समाने की शक्ति न होने के कारण कहेंगे, मुझे तैयारी करनी है, समय चाहिए। यह आवाज़ ऐसा होता है जैसे गृहस्थी का। कइयों की सोचने की आदत होती है। हमें एक मिनट में पता है, यह

घर का कपड़ा है, यह बाहर का कपड़ा वा चप्पल है। बैज भी हमारा कभी गुम नहीं हुआ होगा, कभी टूटा नहीं होगा। वास्तव में हम सदा ही तैयार हैं। क्या करना है, दो रोटी ले करके जाना है, बस। मुझे रोटी बनानी है, मुझे खानी है, यह आदत है तो इसको सीधा ही कहा जाता है गृहस्थी नेचर। जो एकदम हल्का है उसे जल्दी तैयार होने में सहयोग मिल जाता है। आवाज़ में आयेंगे तो सामने वाले भी कहेंगे, इतना टाइम लगेगा क्या तैयारी करने में! लेकिन यह ध्यान रखो, जैसा कर्म मैं करूँगी मुझे देख और करेंगे।

प्रश्न:- कोई भूल हो जाए तो क्या करें?

उत्तर:- कुछ भूल होती है तो जो श्रीमत पर चलने वाले हैं उनको सुना दो। यह तो जानते हो ना, श्रीमत पर कौन चलते हैं? साकार बाबा को कोई पत्र में सच बताता था, तो बाबा ऐसे पत्र उठाके पढ़ते भी नहीं थे, सेकेण्ड में कहते थे, बच्चे, भूल जा। फिर से नहीं करना। अगर अभी भी फिर-फिर भूल करते रहेंगे, बतायेंगे नहीं तो पद भी कम, सज़ायें भी ज्यादा, संगमयुग का जो अमूल्य समय गंवाया तो पश्चाताप बहुत करना पड़ेगा। ऐसी घड़ी अच्छी नहीं, तो अपने ऊपर मेहरबानी करो, पश्चाताप की घड़ी न आवे इसके लिए सेल्फ रियलाइजेशन

से रियल्टी की रॉयल्टी में रहें। अपने ऊपर रहम भावना से, 'यह अच्छा नहीं करता', यह ख्याल आने नहीं देती हूँ। हाँ, यह भावना रखती हूँ कि आज नहीं तो कल अच्छा करेगा, भले समय लगेगा। दूसरा, अगर मैं ये कहूँ कि आपके साथ नहीं निभा सकती हूँ तो दोष किसका? इस प्रकार का जो ख्याल आता है, उससे हिसाब-किताब बन जाता है। आजकल ज्ञान मोटे रूप में सबके पास है, पर महीन रूप में 'इन के साथ नहीं चल सकता/सकती हूँ', थोड़ा समय साइलेंस में जाके विचार करो, यह शब्द किसके मुख से निकल रहा है? सबका दोष इकट्ठा करके, अपने को सही समझ कर कहना, मैं नहीं चल सकती हूँ। 'दूसरे को बदलना चाहिए' क्या इस प्रकार की थिंकिंग योगी की है? औरों का दोष देखने से अपने को फ्री करो, तो जो बाबा ने बोला, 'वृत्ति से सेवा करो' वो हो सकेगी।

प्रश्न:- चारों सबजेक्ट में से आपका मनपसन्द सबजेक्ट कौन-सा है?

उत्तर:- चारों ही।

प्रश्न:- आपकी खुद की विशेषता क्या है?

उत्तर:- जो बाबा ने दिया है वह सबको मिले।

प्रश्न:- आपका मनपसन्द गुण कौन-सा है?

उत्तर:- दे दान, छूटे ग्रहण।

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत - 11

✳ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख की अगली कड़ी में आगे बढ़ते हुए आदर्श व्यवस्था स्थापन करने के एक और गुण के बारे में विचार करते हैं। भौतिक दुनिया के कारोबार के संबंध में जिन्होंने किताबें लिखी हैं, उन्होंने एक और गुण के बारे में लिखा है कि कारोबार करने वाले desirable होने चाहिए जिसका dictionary अर्थ है वांछनीय, ऐसे इष्ट व्यक्ति जो कारोबार के योग्य हों।

मैनेजमेन्ट के बारे में लिखने वाले को मैनेजमेन्ट गुरु तथा राजनीति के बारे में लिखने वाले को राजनीतिक गुरु मानते हैं। भारत में चाणक्य को राजनीति का गुरु माना गया है। चाणक्य ने सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य को स्थापन करने में मुख्य भूमिका अदा की थी। ऐसे ही इंग्लैण्ड में राज्यव्यवस्था और लोकतंत्र व्यवस्था के बारे में लिखने वाले Professor A.V. Dicey एक बहुत प्रसिद्ध मार्गदर्शक गुरु हुए हैं। उन्होंने लिखा है - Democracy rarely permits a country to be governed by its desirable and able persons. अर्थात् लोकतंत्र के

कारोबार में अच्छे और योग्य व्यक्तियों के द्वारा कार्य होने की संभावना बहुत कम है। इसलिए राज्यव्यवस्था को मानने वाले राजकीय समालोचक (Political critics) कहते हैं कि भारत की संसद में अच्छे लोग कम चुनाव जीतकर आते हैं। जो लोग चुनकर आते हैं उनमें से ज्यादातर अपनी जाति, बल, पैसे तथा गुण्डा तत्व के आधार पर चुने जाते हैं और इस समय अंदाज है कि 1/3 सांसद एवं विधायक दागी हैं अर्थात् जिनके ऊपर कोर्ट केसेज चल रहे हैं। मेरे एक परिचित पुलिस ऑफिसर ने मुझे कहा कि ऐसे गुण्डा तत्व वाला एक व्यक्ति जब चुनाव जीतकर एम.एल.ए. बनकर आया तब हमारे लिए विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई क्योंकि कल तक जिसे हमने जेल की सलाखों के पीछे कैदी के रूप में रखा था उसे आज हमें सलाम करना पड़ रहा था।

विश्व के इतिहास में भी देखने में आता है कि कई ऐसे राजायें हुए हैं जिनका राज्यकारोबार इतना भ्रष्ट था कि प्रजा उनसे सदा असन्तुष्ट रहती थी इसलिए प्रजा ने उनके विरुद्ध क्रांति

की। जैसे रशिया में ज़ार तथा उनके प्रमुख सलाहकार रासपुतिन अत्याधिक भ्रष्ट एवं दुराचारी होने के कारण प्रजा ने उनके विरुद्ध क्रांति की जिसमें प्रजा ने ज़ार व उसके परिवार वालों को मार डाला तथा रासपुतिन की भी हत्या की। ऐसे ही द्वितीय विश्व महायुद्ध में एडॉल्फ हिटलर को भ्रांति थी कि केवल जर्मन लोग ही आर्यन हैं इसलिए सारे विश्व पर उन्हें ही राज्य करने का हक है इसलिए उसने द्वितीय विश्व महायुद्ध कराया जिसमें करोड़ों लोगों की हत्या हुई एवं अरबों रुपयों का नुकसान हुआ। अमेरिका में भी प्रेसीडेन्ट निक्सन को भ्रष्टाचार के कारण राष्ट्राध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा और अन्य एक वाइस प्रेसीडेन्ट जो पहले एक राज्य के गवर्नर थे, उन्होंने भ्रष्टाचार किया एवं वाइस प्रेजिडेन्ट बनने के बाद भी भ्रष्टाचार करते रहे और भ्रष्टाचार के पैसे बैंक से लेकर अपने बैंक में जमा करते रहे। जब अखबार वालों को उनके भ्रष्टाचार के बारे में मालूम पड़ा तो उनके ऊपर कानूनी कार्यवाही शुरू की परंतु उन्होंने खुद अपने पद से इस्तीफा दे दिया और समझौता हो गया।

इस प्रकार आज की दुनिया में योग्य व्यक्ति राज्यकारोबार करने वाले बहुत कम मिलते हैं। भारत में भी ऐसे प्रधानमंत्री हुए हैं जो योग्य नहीं थे एवं उनके समय में देश में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया था। विदेश में तो क्रांति होती है लेकिन भारत में तो चुनाव होता है जिससे लोग देश में परिवर्तन लाते हैं और योग्य व्यक्ति को चुनकर लाते हैं।

शिवबाबा ने भी योग्य व्यक्ति चुनने के लिए तीन मापदंड रखे हैं - स्वपसंद, लोकपसंद और प्रभुपसंद। स्वपसंद में तो आप जानते हैं कि हरेक को निजी जीवन में सत्यता, पवित्रता आदि दैवी गुणों की धारणा करनी है और इन गुणों के आधार पर ही वे शिवबाबा के द्वारा स्थापित राज्य में राज्य कर सकते हैं। इस पर एक कहानी है कि एक राजा था, उसने अपने जीवन में ऐसे भ्रष्टाचारी कार्य किये कि प्रजा उसे पसंद नहीं करती थी। जब वह मृत्युशैया पर था तब उसने अपने राजकुमारों को बुलाया और कहा कि आप ऐसे कार्य करो जो लोग कहें कि इनसे तो इनका बाप योग्य था, अच्छा था। बाद में उनके बड़े बेटे ने ऐसे-ऐसे कानून बनाये कि लोग परेशान हो गये और कहने लगे कि इनसे तो इनका बाप अच्छा था। अमेरिका में भी जब व्यक्ति चुनाव में खड़े होते हैं तो वे लोगों को बहुत

अच्छा खाना खिलाते हैं और अपने परिवार से मिलते हैं इससे लोग समझते हैं, अगर इनका परिवार सुखी है तो जरूर यह चुनाव के बाद हमें भी सुख देंगे।

लोकपसंद : - शिवबाबा ने कहा है कि हरेक को लोकपसंद बनना जरूरी है क्योंकि जो लोकपसंद होगा वही भविष्य में राजा बनेगा। जो व्यक्ति जितना मन-वचन-कर्म द्वारा सबको सुख, शांति की अनुभूति करायेगा उतना ही वह लोकपसंद होगा। अभी बाबा लोकपसंद के आधार पर लोगों का चुनाव कर रहे हैं। सबको आगे बढ़ने का और श्रेष्ठ पद पाने का समान अधिकार एवं मौका देते हैं। ज्ञान भी सबको समान देते हैं परंतु फिर भी बच्चे नम्बरवार बनते हैं। नम्बर हरेक अपने पुरुषार्थ अनुसार अपने आप ही लेते हैं, बाबा नहीं देते हैं। दुनिया में तो चुनाव के परिणाम के बाद ईर्ष्या-द्वेष आदि आ जाते हैं परंतु बाबा जो राजाई स्थापन कर रहे हैं, उसमें सभी बच्चे अपने वर्तमान तथा भविष्य के पुरुषार्थ के अनुसार ऊँच पद की प्राप्ति करते हैं इसलिए सतयुगी राज्य में कभी भी किसी में भी आपस में मतभेद नहीं होते हैं।

मैं जब ऑस्ट्रेलिया में था तब मुझे एक बहन ने पूछा था कि सतयुग में लक्ष्मी-नारायण व अन्य देवी-देवतायें इतने गहने आदि क्यों पहनते हैं, ऐसे

लक्ष्मी-नारायण को हम कैसे रिगार्ड दें? मैंने उस बहन को कहा कि ये मुकुट, जेवर आदि तो वहाँ के ऐश्वर्य के प्रतीक हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वे सारा समय इन ज़ेवरों को पहनकर घूमते रहते हैं। जैसे इंग्लैण्ड की महारानी के पास करोड़ों पाउण्ड के ज़ेवर हैं। उनका जब फोटो छपता है या पोस्टल स्टैम्प पर उनका जो फोटो होता है उसमें वह राजमुकुट पहने होती हैं, इसका मतलब यह नहीं कि वे सारा समय सभी कीमती गहनें एवं राजमुकुट पहनकर ही रहती हैं। फिर मैंने उस बहन को दूसरी बात बताई कि वर्तमान में हमारी जो दादियाँ हैं उन्होंने वर्तमान में श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर सभी का विश्वास अर्जित किया है और वही फिर भविष्य में राज्य अधिकारी बनेंगी। तब मैंने बहन से पूछा कि क्या आपको उनके राज्य में आना पसंद है? उस बहन ने कहा, जरूर आना पसंद करूंगी। इस प्रकार वर्तमान समय के पुरुषार्थ एवं लोकपसंद व्यवहार के आधार पर ही हम भविष्य में विश्वराज्य अधिकारी बन सकते हैं इससे हमारा आपस में मतभेद भी नहीं होगा। कई बार अनेक आत्मायें लोकपसंद बनने की बजाय लोगों पर अपनी विचारधारा लादते हैं परिणामस्वरूप वहाँ तानाशाही हो जाती है और ऐसे समय पर जब क्रांति होती है तब तानाशाह के पुतलों को

गिराकर फाँसी देते हैं। जैसे रशिया में लेनिनग्राद में वहाँ के तानाशाह लेनिन के पुतले को गिराया और फाँसी पर चढ़ाया और उस शहर का नाम लेनिनग्राद से बदलकर फिर से सेन्ट पीटर्सबर्ग कर दिया। इस प्रकार तानाशाह कभी लोकपसंद नहीं बन सकते।

प्रभुपसंद: — प्रभु पसंद बनना बहुत मुश्किल है। हम आत्मायें त्रिकालदर्शी नहीं हैं परंतु शिवबाबा तो त्रिकालदर्शी हैं। इस कारण वे हमारा भूत-वर्तमान-भविष्य सब जानते हैं। मैं अपना अनुभव बता रहा हूँ। यह मेरा अनुभव मैं अपने अहंकार के कारण नहीं बता रहा हूँ परंतु परमात्मा के कार्य के बारे में बता रहा हूँ। नवम्बर 1968 में वर्ल्ड रिन्युअल स्पिरिचुअल ट्रस्ट की स्थापना हुई और उसमें सभी बातों का तथा ट्रस्टीज के नाम का निर्णय हो चुका था, सिर्फ मैंनेजिंग ट्रस्टी कौन बनेगा यह फाइनल होना बाकी था। दादी प्रकाशमणि, दीदी मनमोहिनी तथा दादा आनंदकिशोर की राय थी कि मैं (रमेश भाई) इस ट्रस्ट का मैंनेजिंग ट्रस्टी बनूँ और इस पर हमारी आपस में बहुत चर्चा हुई तथा अंत में यह निर्णय हमने ब्रह्मा बाबा पर छोड़ दिया।

जब बाबा के पास आये तो रात्रि क्लास में भी बहुत चर्चा हुई तथा मैं भी 1/2 घंटा इसी बात को लेकर बोलता

रहा कि मैं मैंनेजिंग ट्रस्टी नहीं बनूँगा। ब्रह्मा बाबा ने मेरी सभी बातों का खण्डन किया और त्रिकालदर्शी शिवबाबा ने ब्रह्मा मुख से महावाक्य उच्चारें कि बच्चे, आप नहीं जानते कि आप भूतकाल में अर्थात् 5000 वर्ष पहले भी इस ट्रस्ट के मैंनेजिंग ट्रस्टी थे, वर्तमान में भी रहोगे और भविष्य में भी आप ही बनेंगे और यही ड्रामा की भावी है। फिर मैंने बाबा को कहा कि यह तो आपका ब्रह्मास्त्र है अर्थात् आपका ब्रह्मवाक्य है। शास्त्रों में कहा गया है कि महाभारत के युद्ध के समय जब अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा था तब श्रीकृष्ण ने सभी पाण्डवों को कहा कि आप इस ब्रह्मास्त्र के सामने नतमस्तक हो जाओ तो यह आपका कुछ अहित नहीं करेगा। अगर आप इसके विरुद्ध युद्ध करेंगे तो नष्ट हो जायेंगे। इसलिए बाबा, आपके ब्रह्मास्त्र के सामने मैं कुछ नहीं कह सकता हूँ और नतमस्तक होता हूँ।

जब मातेश्वरी जी अव्यक्त हुए तब यज्ञ की मुख्य संचालिका तथा मुख्य सह-संचालिका किसे बनाया जाये, यह ब्रह्मा बाबा के सामने बड़ी समस्या थी क्योंकि उस समय उनकी बेटी दादी निर्मलशांता जी, पुत्रवधू दादी बृजेन्द्रा जी तथा भतीजे की पत्नी दादी संतरी जी भी थी। साथ-साथ दादी जानकी जी, दादी चन्द्रमणि जी एवं दादी मनोहर इन्द्रा जी आदि सब

थे, उन सभी में से ऐसे सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को चुनना बहुत बड़ा काम था। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने इन सबमें से दादी प्रकाशमणि जी तथा दीदी मनमोहिनी जी को यज्ञ की मुख्य संचालिका तथा मुख्य सह-संचालिका नियुक्त किया। ब्रह्मा बाबा ने वंश परंपरा की बात को स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार बाबा ने योग्य व्यक्ति को इष्ट व्यक्ति बनाया। अव्यक्त बापदादा ने एक स्लोगन दिया है, इष्ट से अष्ट बनो अर्थात् जो वर्तमान में इष्ट बनते वह भविष्य में इष्ट देवता बनते और वही अष्ट रत्न में आते हैं। इष्ट बनना अर्थात् Desirable बनना बहुत जरूरी है तभी हम अष्ट रत्न में आ सकते हैं।

इसी संदर्भ में हम सब जानते हैं कि मातेश्वरी जी के ज्ञान में आने से पूर्व कई आत्मायें ज्ञान में आईं और समर्पित भी हुईं। मातेश्वरी जी को ज्ञान देने वाली किकनी बहन थी परंतु ब्रह्मा बाबा ने 18-19 वर्ष की कन्या को ही मातेश्वरी के पद पर नियुक्त किया और उनके हाथ में इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का सम्पूर्ण कारोबार सौंप दिया। वह प्रभुपसंद बनने की परीक्षा में पहले नम्बर में पास हुई इसलिए सर्वयोग्य और हम सबकी इष्ट बनीं। ❖

चुनौतियों को अवसरों में बदलो

दिलाराम ने खोले दिल के द्वार

* ब्रह्माकुमारी मंजू अवस्थी, लखनऊ

मैं विगत 12 वर्षों से हृदय रोग से पीड़ित थी जिसका लगातार इलाज चल रहा था किन्तु फायदा होने की बजाय समस्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी। नवम्बर, 2012 में मुझे हृदय में काफी तेज दर्द हुआ जिसके कारण लखनऊ मेडिकल कालेज के लारी कार्डियोलॉजी सेन्टर में दाखिल किया गया। पता चला कि तीन धमनियों में ब्लाकेज क्रमशः 100%, 80% तथा 70% है। डाक्टर ने मुझे एंजियोप्लास्टी कराने की सलाह दी, जिसकी तारीख 07 फरवरी, 2013 निश्चित हो गई। इसी बीच हमें जानकीपुरम सेवाकेन्द्र से आबू में चलने वाले कैड (CAD) कार्यक्रम के बारे में पता चला। हमने अपने पूरे पेपर्स डा.सतीश गुप्ता को आबू भेज दिए। उन्होंने अप्रैल, 2013 के कैड के कार्यक्रम में हमें आमंत्रित किया।

खुशी की चमक से मिटी बीमारी की मलीनता

आबू के शान्त एवं पवित्र वातावरण में बाह्य जगत की किसी भी चीज़ से, जिसकी हमें ख़ास आवश्यकता न हो, मुक्त रखा गया। कहाँ हम अपने को दिल के मरीज़

मानकर आये थे और यहाँ आकर हम लोगों को नाम मिला 'दिलवाले'। डाक्टर गुप्ता और उनकी पूरी टीम निःस्वार्थ भाव से, पूरी लगन से, दिल की आत्मीयता से बात करके, दिल एवं दिलाराम का स्पष्ट ज्ञान देकर हर मरीज़ को प्रसन्नता की चाबी दे देते हैं। यहाँ आकर मरीज़ भूल जाता है कि उसे कोई बीमारी भी है। मन को एकदम व्यस्त कर देते हैं जिससे चिन्ता के लिए समय ही नहीं बचता। कार्यक्रम के दौरान हमें आहार नियन्त्रण, सुबह-शाम की सैर, राजयोग, ईश्वरीय महावाक्यों के नियमित श्रवण से होने वाले लाभ की व्यापक जानकारी मिली। बीमारी आने का कारण व स्वस्थ रहने की जीवन शैली बताई गयी जिसको हमने पूर्णतया फालो किया। शुद्ध शाकाहारी भोजन घर पर स्वयं शिवबाबा की याद में बनाते हैं और प्रभु चिन्तन में खाते हैं। बाहर के तले-भुने पदार्थ, पेय पदार्थ, मसालेदार भोजन से किनारा कर लिया है। रोज़ सुबह-शाम टहलना भी दिनचर्या में निश्चित है ही। सुबह अमृतवेले दिलाराम परमात्मा से दिल की बातें और शाम को उनके साथ दिल का

हाल शेयर करना जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू बन गया है। प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर जाकर ईश्वरीय महावाक्य सुनना व मुरली के अनमोल प्वाइंट्स पर चिन्तन और मनन करना जीवन का अभिन्न अंग हो गया है। अब बीमारी की मलीनता, खुशियों की चमक से मिटती जा रही है।

शरीर के साथ

मन भी खुशहाल

स्वास्थ्य में निरन्तर प्रगति के अन्तर्गत कैड कार्यक्रम में पुनः क्रमशः अगस्त, 2013 एवं नवम्बर, 2013 में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिससे स्वास्थ्य सुधार में तीव्रता आती गई और स्वस्थ जीवन शैली ही असली जीवन शैली बन गई। शरीर के साथ मन भी स्वस्थ एवं खुशहाल होता गया। आज मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। तीनों ब्लाकेज पूर्णरूपेण खत्म हो गये हैं। न सिर्फ हमें बल्कि घर के अन्य लोगों को भी यह चमत्कार लग रहा है। हमारे साथ हमारे सहयोगी बनकर युगल श्री ओ.पी.अवस्थी जी गये थे, उनके घुटनों में काफी दर्द रहता था। उन्होंने भी कैड कार्यक्रम अटेन्ड किया और बाद में भी यही जीवन शैली अपनायी, उनको भी

बहुत-बहुत फायदा है और वे भी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नियमित विद्यार्थी हैं। जीवन जीने का असली आनन्द तो अब आ रहा है। हम तो चाहते हैं कि चाहे कोई दिल का

मरीज़ हो या नहीं पर खुश रहने के लिए यह जीवन शैली ज़रूर अपनाये। डा.गुप्ता एवं उनकी पूरी टीम को दिल से बहुत-बहुत आभार जिन्होंने ऐसी खतरनाक बीमारी से मुक्ति दिलायी,

वह भी बिना आपरेशन के। दिल की हर धड़कन से दिलाराम को धन्यवाद जिन्होंने बीमारी के बहाने ही मुझे अपने दिल के इतना करीब ले लिया। ❖

तीव्र तपन से क्या सीखें हम..?

राजेश गुप्ता 'अनमोल मणि', रायपुर

सूर्य का तापमान बाहर कैसा भी हो, हम उसको बदलने की चिंता न करते हुए अपने-अपने घरों के तापमान को यथाशक्ति कम करने का पुरुषार्थ करते हैं। यही प्रक्रिया यदि हम अपने मन के वातावरण को बदलने के लिए अपनायें तो निंदा-स्तुति, मान-अपमान, ईर्ष्या-द्वेष, घृणा आदि अनेक दुष्प्रवृत्तियों से सहज ही मुक्त हो सकते हैं। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि 100 डिग्री तापमान से भी ज़्यादा खतरनाक हैं। वातावरण में कितनी भी गर्मी हो, हम ए.सी. अथवा कूलर आदि साधनों का प्रयोग करके शीतलता का ही आनन्द लेते हैं, उसी प्रकार दुनिया के लोगों में कितनी भी बुराई हो, उसके बारे में किसी भी प्रकार का विचार न करके हम शांति, आनन्द, प्रेम, पवित्रता, ज्ञान आदि मूल गुण अपनाकर जीवन को सुखी और शान्त बना सकते हैं। परन्तु यह तभी सम्भव है जब हम सदैव स्वयं की गहराई से जाँच करते रहें और स्वयं की सूक्ष्म कमियों को समाप्त करने का पुरुषार्थ करते रहें। इसके साथ-साथ गुणों के भण्डार परमपिता परमात्मा से मन-बुद्धि का सम्बन्ध जोड़कर रखें। बाहर की तीव्र तपन, वास्तव में, हमें यही बात समझा रही है। ❖

ज्ञानामृत

ब्रह्माकुमार अमर, ईदगाह (आगरा)

गीता ज्ञान प्रवाहक, वाहक ब्राह्मण कुल की वाणी।
ज्ञान-योग की निर्मल धारा, जन-जन की कल्याणी!!

साधु-सन्त या कि गृहस्थ हों, ज्ञानी या विज्ञानी।
देश-विदेशों में पहुँचाती सबको प्रभु की वाणी!!

अनुभव-गम्य विचारों का नवनीत सदा ले आती।
बीती आधी सदी, आज भी सबका मन हर्षाती!!

स्वयं प्रभु ने 'ज्ञानामृत' की महिमा मुख से गाई।
हर पल करते प्रतीक्षा इसकी, बहनें हों या भाई!!

आ जाती हाथों में तो हृदय कमल-सम खिलता।
प्रायः लुप्त जो ज्ञान प्रभु का 'ज्ञानामृत' से मिलता!!

इसमें दिव्य दृष्टि 'संजय' की, जगे हृदय में 'आत्मप्रकाश'।
'ज्ञानामृत' पढ़कर सब करते, प्रभु-मिलन का ही आभास!!

नित्य नये अनुभव ब्रह्मा-वत्सों के लेकर आती।
जिनको पढ़कर विकट समस्या छू-मन्तर हो जाती!!

प्रभु-प्यार होता है कैसा? गर चाहें अधिकारी बनना।
कोई अंक उठाकर पढ़ लें "ज्ञानामृत" का पन्ना!!

जीवन में हो कठिन समस्या, ग्रन्थि सुलझ ना पाई।
तो फिर संगम पर 'ज्ञानामृत' पढ़ो-पढ़ाओ भाई!!

प्रभु-वत्सों की पावन वाणी, मुखरित इससे होती।
नव-संचार प्राण का होता, जगे आत्मा सोती!!

स्वर्ण जयन्ती वर्ष सभी मिल ऐसा दिव्य मनायें।
'ज्ञानामृत' की पावन प्रति घर-घर में पहुँचायें!!

सच्ची सुंदरता

* ब्रह्माकुमार हेमंत, शान्तिवन, आबूरोड

यादगार ग्रंथ रामायण में वर्णन आता है कि एक बार माता सीता ने स्वयं के सुंदर पैर देखते हुए श्रीराम जी से पूछा, 'स्वामी, आपके चरण सुंदर हैं या मेरे?' वास्तव में सीता जी के चरण तो श्रीराम जी से भी बढ़कर सुंदर थे। श्रीराम जी ने मुसकराते हुए लक्ष्मण जी को जवाब देने का इशारा किया। लक्ष्मण जी के लिए जवाब चुनौतीपूर्ण था लेकिन युक्ति से लक्ष्मण जी बोले, 'भैया, चरण तो उसके सुंदर हैं जिसका आचरण सुंदर हो।' सच पूछो तो आचरण की सुंदरता ही सच्ची सुंदरता है। जब मानवात्मा में छिपे दिव्यगुण आचरण के द्वारा प्रकट होते हैं तो वे ही मानव को सच्चा सौंदर्य प्रदान करते हैं।

अमित छाप छोड़ता है

आत्मिक सौंदर्य

खेद की बात है कि आज शारीरिक सौंदर्य को ही असली सुंदरता मान लिया गया है। दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए बनावटी सौंदर्य प्रसाधनों से सजना, आकर्षक वस्त्र, आभूषण पहनना, यह क्षणभंगुर सुंदरता है। इसकी भेंट में ज्ञान-पवित्रता-शान्ति-प्रेम-आनंद-शक्ति इत्यादि मूल गुणों को व्यवहार द्वारा दिखाना ही आंतरिक सौंदर्य है।

यही सदाकाल की अविनाशी सुंदरता है। देह का रूप, रंग कितना ही लुभावना हो पर यदि व्यवहार में शालीनता या सभ्यता ना हो, दुखदाई वचन बोलता हो, दृष्टि-वृत्ति चंचल हो, बात-बात में क्रोधाग्नि से मुखड़े को लाल-पीला करता हो, तो दैहिक सुंदरता का धनी भी बदसूरत लगने लगता है।

मन में नेक व भले विचार हों, वाणी में मधुसम मिठास हो, कर्म सुखदाई हों, पुण्यकर्म के पथ पर निरन्तर अग्रसर हो, त्याग की मिसाल हो, लोककल्याण के यज्ञ में तन-मन-धन की आहुति डाली हो, ईश्वरीय ज्ञान के मनन में मग्न हो, प्यारे प्रभु की यादों में खोया रहता हो, परमात्म गुणों की धारणा ही जिसका धर्म हो, सेवा ही जिसका श्वास हो, जो योगाग्नि में तपकर सच्चे सोने जैसा उजला बना हो, उसका तन दिखने में कितना ही कुरूप क्यों न हो, वह आकर्षण का केन्द्रबिंदु बन जाता है। उसका आत्मिक सौंदर्य हृदय पर अमित छाप छोड़ता है।

**मन-बुद्धि को सत्यम् शिवम्
सुन्दरम् में लगाएं**

आज कवामुकता से होते महाविनाश का कौन साक्षी नहीं? फिर भी संसार शरीर के सौंदर्य की सामग्री

के संग्रह का समर्थन कर रहा है। टेलिविजन, अखबार आदि संचार माध्यमों में, दैहिक आकर्षण की आग में तेल डालने वाले विज्ञापनों की भरमार होती है। ऐसे माहौल में आवश्यकता है आत्मिक जागृति द्वारा ज्ञान की लौ से अंतःकरण में उजियारा करने की। जब आत्मा के असली सौंदर्य का अनुभव होगा तो सहज ही बनावटी सुंदरता से दृष्टि हटेगी, मिथ्या मायावी मनोकामनाएँ मिटेंगी। आंतरिक सुंदरता के निखार से ही स्वर्गिक सुखों का समंदर हिलोरें मारने लगेगा। भले ही आधुनिक इंद्रियलोलुप सुखों की आज भरमार है परंतु अल्पकालीन सुख असली आत्मिक आनंद का स्वाद कहाँ देते हैं? जिंदगी का असली मजा तो स्वच्छता, सादगी आदि सदगुणों को धारण कर पुण्यप्रदाई कर्म करने में है। समय की मांग यही है कि हाड़-मांस की नश्वर काया की छाया से मन का ध्यान हटायें, बुद्धि को सत्यम् शिवम् सुंदरम् के विराट गुणचरित्रों में लगायें एवं स्वयं को शिव समान सदगुणों से शृंगारी बनायें। तभी आत्मा में सच्ची सुंदरता का निखार होगा, मानव का उद्धार होगा व धरा पर सच्ची सुंदरता से स्वर्णिम सृष्टि सजेगी। ❖

बेफ़िकर बादशाह

* ब्रह्माकुमार डॉ. आर.पी. सोनी, हमीरपुर (हि.प्र.)

मैंने सन् 1974 में प्रथम बार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी देखी। निराकार परमात्मा शिव धरती पर युग बदलने के लिए आ चुके हैं, यह बात अच्छी लगी। शिव और शंकर के अलग-अलग चित्र भी देखे। समय के अभाव और स्थानीय सेवाकेन्द्र का सही पता न होने के कारण देखी गई प्रदर्शनी का ज्ञान मन में ही रह गया। सन् 1994 में मेरे गाँव में ब्रह्माकुमारी बहनें ज्ञान समझाने आईं। यह समाचार मिलते ही मैं समय निकालकर वहाँ पहुँचा। बहनों से ईश्वरीय ज्ञान समझकर सृष्टि-चक्र तथा परमात्मा के कार्य पर पूरा विश्वास हो गया। दिसम्बर, 1996 में मुझे शिवबाबा से सम्मुख मिलने का सौभाग्य मिला। डायमण्ड हॉल बन रहा था। शिवबाबा के बोले हुए शब्द आज भी मेरे कानों में गूँजते हैं कि मैं उन सब कारीगरों की मालिश करता हूँ, मुबारक देता हूँ जिन्होंने विशाल डायमण्ड हॉल बनाया।

सहायता नहीं मिल रही थी

मार्च, 1997 में सरकारी सेवा करने हेतु मेरा तहसील स्पीति-काजा (हि.प्र.) में जाना हुआ, जहाँ कि समुद्र

तल से ऊँचाई 14 हजार फीट से भी अधिक है। चारों तरफ बर्फ से लदे ऊँचे पर्वत हैं। वृक्ष नहीं होते हैं। दो-तीन फीट ऊँची मौसमी झाड़ियाँ होती हैं। तापमान दिन में भी कई बार 1 डिग्री सैल्सियस से नीचे चला जाता है। वहाँ सारे दिन में एक ही सरकारी छोटी बस जाती थी। वह बस मलिंग स्थान पर रुक गई क्योंकि आगे सड़क टूट चुकी थी। दूसरी बस डेढ़ किलोमीटर दूरी पर मिलनी थी। मेरे पास एक बिस्तर, एक बैग व छोटा अटैचीकेस (लगभग 15 किलो सामान) था। मैंने एक यात्री से बिस्तर उठाने की सहायता मांगी। उसने एक सौ रुपये मांगे परन्तु वह अपना सामान उठाकर चला गया। फिर दूसरे आदमी से बात की, उसने बिस्तर ले जाने के 500 रुपये मांगे परन्तु उसके साथी ने इन्कार कर दिया कि हम आपके नौकर नहीं हैं।

मन ही मन बाबा से बात

तेज ठण्डी हवा चल रही थी। छोटे-छोटे पत्थर हवा से हिलकर आगे-पीछे गिर रहे थे। आबादी कहीं नज़र नहीं आ रही थी। संकल्प आया कि यहां से घर वापिस चला जाऊँ, सरकारी सेवा नहीं करनी है। परन्तु

बस वहाँ से वापिस शिमला जा चुकी थी। शिव बाबा के सिवाय वहाँ मेरा कोई साथी नहीं था। 'मैं ज्योति बिन्दु स्वरूप आत्मा शान्तिधाम निवासी परमपिता परमात्मा शिव की संतान हूँ', मन में इसी एक पंक्ति का सिमरण चल रहा था। सामान उठाने पर सांस फूल रहा था। मैंने पहले अपना बिस्तर 100 गज तक रखा, फिर बैग व अटैचीकेस ले गया। इस प्रकार एक-एक नग आगे तक ले जा रहा था। मन-ही-मन बाबा से बातें भी कर रहा था कि शिव बाबा, जहाँ बड़ी आबादी होती है वहाँ तो आप अपने बच्चों की मदद करते हैं परन्तु इस बर्फीले पर्वतीय मरुस्थल में आप से मुझ पर एक भी शक्ति की किरण नहीं आ रही है।

शक्ति की तीन किरणें

चिन्तन कर ही रहा था, तभी वहाँ तीन आदमी पहुँच गए। उनके पास न कोई सामान था, न गर्म कपड़े थे। उनकी आयु 20 से 30 वर्ष के बीच थी। वे बिना दाढ़ी-मूँछ वाले थे, साधारण सफेद पायजामा-कमीज़ पहने थे। मैंने उनसे बस तक बिस्तर ले जाने के लिए प्रार्थना की। उन तीनों ने मेरे तीनों नग उठाए और चल पड़े। मैं

खाली हाथ उनके पीछे-पीछे चलता रहा। हम बस तक पहुँच गए। बस चालू हो चुकी थी परन्तु एक यात्री ने बस को रुकवाया। यह यात्री मेरे साथ पीछे से ही आया था। उन तीनों में से एक भाई ने बैग मुझे पकड़ाकर, मुझे बस में बैठने का इशारा किया। दूसरा भाई बिना बोले ही बस पर चढ़ गया और मेरा बिस्तर व अटैची केस ऊपर रख कर ड्राइवर को चलने का इशारा कर दिया। उन्होंने मुझ से कोई बात नहीं की। वे कौन थे, कहाँ से आए और कहाँ जा रहे थे, मुझे नहीं मालूम। मैं यही सोचता रहा कि ये तीनों बस में बैठेंगे तो मैं उनका धन्यवाद कर किराया दे दूँगा पर वे चुपके से चले गए। इस प्रकार शिव बाबा ने एक नहीं, शक्ति की तीन किरणें भेज कर मेरी सहायता की। मैं शिव बाबा का कल्प-कल्प के लिए ऋणी हूँ और कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ।

पत्र से मिली सावधानी

जून महीने तक बर्फ सड़क से हटा दी गयी। तब मैं काजा की अंतिम पंचायत में अपने सेवा स्थान पर पहुँच गया। वहाँ की भाषा अलग थी। मुझे सीढ़ियाँ चढ़ने पर भी साँस फूल जाता था। वहाँ बच्चे से बूढ़े तक सभी शराब व मांस का प्रयोग करते थे। शाकाहारी शब्द जानते भी नहीं थे। मकान-मालिक ने समझाया कि यहाँ के ठण्डे मौसम में प्याज-लहसुन के बिना जीवित रहना असम्भव है। दूसरे ही दिन सेवाकेन्द्र की बहन का पत्र प्राप्त हुआ। साथ में कुछ मुरलियाँ मिलीं। पत्र में सावधान किया गया था कि प्याज मत खाना भले मौसम कितना भी ठण्डा हो। बादाम, काजू व खजूर खाते रहना।

बाबा ने कर रखे थे सब समाधान

कुछ दिनों तक वहाँ एक ऐसे अध्यापक का स्थानान्तरण हो गया जो ईश्वरीय ज्ञान में चलता था। वह मेरे ही साथ रहा और घर का सारा काम स्वयं करता था। मेरा रक्तचाप 200/120 के लगभग रहता था क्योंकि वहाँ आक्सीजन की बहुत कमी थी, थकावट का बहुत

अनुभव होता था। परन्तु अध्यापक भाई के साथ रह कर वहाँ का समय बहुत अच्छा व्यतीत हो गया। मेरे सरकारी सेवास्थान पर डाक महीने में दो बार जाती थी। उस समय मोबाइल फोन की सुविधा नहीं थी। फोन करने के लिए 60 किलोमीटर का रास्ता तय करके जाना पड़ता था। घर में कोई प्रिय या अप्रिय घटना होती तो उसका आभास हो जाता था। मैं उस घटना की जानकारी घर वालों को देता तो वे हैरान हो जाते थे। शिव बाबा ने उस बर्फानी मरुस्थान में मुझ पर आने वाली मुसीबतों का पहले से ही समाधान कर रखा था। हम दुनिया के किसी भी कोने में अपना जीवन व्यतीत करें, परमात्मा की दृष्टि सदा हम पर रहती है। इसलिए शिव बाबा हमें चिन्ताओं से मुक्त कर बेफ़िकर बादशाह बना रहे हैं। ❖

मेरा तो घर मधुबन

ब्रह्माकुमार विनोद सिंह गुर्जर, महु (इन्दौर)

मेरा तो घर मधुबन है, मधुबन है, मधुबन है,
यहाँ पर काशी के शिव हैं, मक्का, काबा के रब हैं।

मेरा तो घर.....

स्वर्ग की आभा है, अरावली शीश झुकाता है।
सूरज आकर पुष्प चढ़ाता, चंदा दीप जलाता है।
कण-कण यहाँ का पावन है, माटी भी चंदन है।

मेरा तो घर.....

विघ्न विनाशक, इंद्रजीत देवों की नगरी है,
सरलचित्त, सहजधारी, ज्ञानामृत गगरी है,
प्रभु मिलन का संगम यहाँ पर रूहों का स्पंदन है।

मेरा तो घर.....

प्यार-दुलार और पालना बाबा देते हैं,
जन्म-जन्म की पतित आत्मा पावन कर देते हैं,
खुशियों से आँचल भरते, ऐसे दुखभंजन हैं।

मेरा तो घर.....

बाल-मनोविज्ञान

* ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

आज के समय में बहुत-से माता-पिता बच्चों के व्यवहार से परेशान और चिन्तित रहते हैं। वे जानना चाहते हैं कि बच्चा उनके मनोनुकूल व्यवहार करे, उसका तरीका क्या है? जब बच्चा जन्म लेता है, वह शारीरिक-मानसिक दोनों रूपों से अविकसित रहता है। मान लीजिए, पिता की 25 वर्ष की आयु में बच्चे का आगमन हुआ। जब बच्चा एक दिन का था तो उसका पिता उससे (25 वर्ष × 365) 9125 गुणा दिन बड़ा था। जब बच्चा दो दिन का हुआ तो पिता केवल 4563 गुणा दिन ही बड़ा रहा। जब बच्चा 100 दिन का हुआ तो पिता मात्र 92 गुणा दिन बड़ा रह गया और जब बच्चा 8 वर्ष का हुआ तो पिता आयु में लगभग 4 गुणा बड़ा ही रह गया। इस प्रकार पुत्र की शारीरिक वृद्धि के साथ-साथ पिता का शारीरिक बड़ापन क्रमशः घटता जाता है।

तीव्र मानसिक-बौद्धिक विकास

शरीर के साथ-साथ बच्चा मानसिक और बौद्धिक रूप से भी विकसित होता जाता है। जब वह जन्मा, कुछ नहीं जानता था पर धीरे-धीरे वातावरण से, मित्र-सम्बन्धियों और आपसे कुछ-कुछ सीखता गया।

चूँकि वह अन्दर से खाली है इसलिए चारों ओर की बातों को अपने में भर लेता है। अपने से बड़ों की हर बात को ठीक समझता है और सबका अनुकरण करने की कोशिश करता है। फिर वह स्कूल जाता है, यदि उसकी कक्षा से सीधे जुड़े हुए पाँच शिक्षक और 50 विद्यार्थी भी हैं तो प्रतिदिन वह इन 55 लोगों के बीच 8 घन्टे रहता है और पढ़ाई के साथ-साथ अपने साथियों से भी जानकारियाँ हासिल करता है, इससे उसका मानसिक-बौद्धिक विकास तीव्रगति से होता है।

रुक जाता है माता-पिता का बौद्धिक विकास

दूसरी तरफ माता-पिता का मानसिक-बौद्धिक विकास इस सोच के साथ रुक चुका होता है कि हम तो बहुत कुछ जान चुके हैं। बहुत सारे दम्पति तो 'बन्द खिड़की और बन्द दरवाज़े' की संस्कृति जीते हैं। कइयों की सारे दिन में व्यापार या नौकरी से जुड़े चन्द लोगों को छोड़कर किसी से कोई बात नहीं हो पाती। नाते-रिश्तेदारों से दूरियाँ हो चुकी होती हैं और मेहमानों का आना-जाना ना के बराबर होता है। ऐसे में बच्चा पड़ोसियों के घर की चहल-पहल



और दोस्तों के माता-पिता के सोशल व्यवहार को छिप-छिप कर देखता है और अपने घर में ऐसे मेल-जोल के अभाव से कुढ़ता भी है। वर्तमान के न्यूक्लीयर परिवारों में पति के दुकान या कार्यालय जाने के बाद बच्चे की माता (आम गृहिणी) तीनों समय के भोजन, कपड़े, सफाई या घर के अन्य कार्यों के दायरे में बन्धी-बन्धी लगभग एक जैसी दिनचर्या व्यतीत करती है। उसके पास भले ही एम.ए., बी.ए. या इनसे भी ऊँची डिग्री है पर वह तो कागज़ों के बीच एक कागज़ बन कर रह गई है। वह सोचती है, शादी हो गई, माँ बन गई, पति ठीक से कमाता है, खर्च चल रहा है, मुझे कोई नौकरी तो करनी नहीं, जो पढ़ा था वो पर्याप्त है। उत्पादों के लेबल पढ़ने से लेकर रोजमर्रा के अन्य भाषाई ज्ञान की ज़रूरत उसकी सहज पूरी हो रही होती है। फुर्सत के क्षणों में कोई

टी.वी.का मनोरंजक कार्यक्रम देख लेती है या मनोरंजन की पुस्तक पढ़ लेती है, इससे ज्यादा कुछ नहीं। यदि बच्चा अपने दोस्त की माँ को अधिक ज्ञानमयी और प्रेममयी पाकर उसकी तरफ आकर्षित होता है या अपनी माँ के आगे उसके गुणों की प्रशंसा करता है तो माँ को ऐसे भी लगने लगता है कि बच्चा बिगड़ रहा है, दूसरों के घरों की ओर खिंचकर अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहा है पर वह यह नहीं समझ पाती कि उसके घर के 'एक जैसी पटरी पर चलते जीवन के' वे तो आदी हो चुके हैं पर संसार के हर सुख पर अपने हस्ताक्षर कर पाने की चाह वाला बच्चा नवीनता और बौद्धिक विकास को तृप्त करने वाले माहौल की तरफ आकर्षित होता है – यह स्वाभाविक बाल सुलभ प्रवृत्ति है, इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है।

नित नई जानकारियों

का आगाज़

पिता का भी कमोबेश यही हाल है। जिस धन्धे में वह लगा है उसमें 8 या 10 या 12 घन्टे खप जाते हैं। नित्यकर्मों का निपटारा, कुछ आवश्यक पारिवारिक कार्यों की पूर्ति, किसी प्रिय मित्र-सम्बन्धी से उठ-बैठ, टी.वी., अखबार, नेट आदि की जानकारी में समय गुजर जाता है। बच्चे के प्रति वे अपना इतना ही कर्तव्य समझते हैं कि हमने उसे अच्छे स्कूल में डाल दिया, वर्दी और

पुस्तकों के साथ-साथ आने-जाने के लिए बस का प्रबन्ध कर दिया। सुबह तैयार करके स्कूल भेजना और शाम को लौटने पर होमवर्क करा देना, इतनी ज़िम्मेवारी माँ सम्भाले हुए है। इस प्रकार दोनों निश्चिन्त रहते हैं कि सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। परन्तु तीव्रगति से बदलते समय में नित्य नई सूचनाओं, जानकारियों का आगाज़ हो रहा है। मीडिया के खुलेपन से, नाटकों, धारावाहिकों, फिल्मों, कहानियों, समाचारों के माध्यम से वर्तमान समाज में शान, शौकत और गर्व की बात समझी जाने वाली चीज़ों से बच्चे बहुत जल्दी वाकिफ हो जाते हैं। साथियों की भेंट में अपने परिवार और प्राप्ति की शान-शौकत या गर्व का पलड़ा थोड़ा भी हल्का महसूस होने पर वे हीन भावना से ग्रसित हो जाते हैं। माता-पिता को बच्चे के भीतर समय से पूर्व भरने वाली इन अनावश्यक जानकारियों का अहसास कम ही रहता है। उनके हाथों के तोते तो तब उड़ते हैं जब चारों ओर देखी-सुनी बात पर बच्चा दृढ़ होकर माता-पिता का भी सामना करने या अवज्ञा करने पर उतारू हो जाता है या हीन विचारों से ग्रसित हो मनोबल और आत्मविश्वास खोने लगता है।

भाई भाग्यविधाता नहीं होते

एक कन्या (8 वर्ष) ने घर में माँ को रोते-रोते कहा, आज मेरी सखी ने

कहा, मेरा तो भाई है परन्तु तुम्हारा कोई भाई नहीं है, लगता है, तुम्हारा भाग्य अच्छा नहीं है। वह माँ ब्रह्माकुमारीज़ के केन्द्र पर आती है। उसने उदास चेहरे से बहनों से समाधान पूछा। बहनों ने कहा, भाई तो भारत की पूर्वप्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी को भी नहीं था, ब्रह्माकुमारीज़ की प्रथम मुख्य प्रशासिका जगदम्बा सरस्वती को भी नहीं था, द्वितीय मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि को भी नहीं था, मर्दानी रानी झांसी को भी नहीं था। अपनी पुत्री को कहना, तुम्हारा भाग्य उन सबकी तरह बहुत ऊँचा है और आध्यात्मिक ज्ञान की धारणा से वह और अधिक ऊँचा बन सकता है। कोई भाई किसी बहन का भाग्यविधाता नहीं होता। भाग्यविधाता तो एक परमात्मा ही है। आज के समय में तो अधिकतर मामलों में बहनें, भाइयों को सहारा दिए हुए हैं। यह सुनकर माँ के चेहरे पर मुसकान आ गई। अवश्य ही माँ का स्वमान जागा तो उसने पुत्री का भी जगा दिया।

ऊँचे विचार बनते हैं

स्वयं की पवित्र मेहनत से

ऐसे ही 'सादा जीवन उच्च विचार' वाली जीवन शैली वाले एक राजयोगी पिता, स्कूल के विशेष कार्यक्रमों में सफेद कुर्ता-पायजामा पहनकर शामिल होते। उसकी बच्ची (10 वर्ष) की सखियाँ कहतीं, आपके पिता बूढ़े

हो गए हैं क्या, जो ऐसे कपड़े पहनते हैं, जींस क्यों नहीं पहनते? बात जब हम तक आई तो हमने कहा, यह तो भारत के बड़े-बड़े नेताओं का पहनावा रहा है। बच्ची को यह गर्व कराना है कि मेरे पिता एक आध्यात्मिक नेता हैं जो घर में रहते उस आध्यात्मिक अनुशासन का पालन करते हैं जो बड़े-बड़े संन्यासियों को भी दुर्लभ है। जींस तो कोई कम्पनी बनाती है, उसे पैसों में खरीदा जा सकता है और वह पैसा तो गलत तरीके से भी आ सकता है पर ऊँचे और कल्याणकारी विचार तो स्वयं की पवित्र मेहनत से बनते हैं, उन्हें खरीदा नहीं जा सकता। यह सुनकर माता और बच्ची आश्वस्त हो गईं।

डगमगा जाता है आत्मविश्वास

एक कन्या (12 वर्ष) ने रोते हुए बताया कि मेरी माता हर समय दूसरे बच्चों से तुलना करते हुए मेरी कमियाँ निकालती रहती है। हालांकि वह प्रेम भी करती है परन्तु जब तुलना करती है तो मेरा आत्मविश्वास डगमगा जाता है, मैं खुद भी अपने को नकारा और अयोग्य समझने लगती हूँ। जब यह बात उसकी माँ को बताई गई तो वह रोने लगी और कहने लगी कि मुझे तो अपनी पुत्री से बहुत प्रेम है। प्रेम तो है पर जैसे अमृत के घड़े में पड़ी विष की एक बूंद ही उसे विषैला बना देती है इसी प्रकार माता-पिता का ज़रा-सा नकारात्मक रवैया भी बच्चों का

सुख-चैन छीन लेता है।

माँ है प्रथम गुरु

ये सब उदाहरण देने के पीछे उद्देश्य यह है कि बच्चे के शरीर और पढ़ाई के दर्जे में वृद्धि होने के साथ-साथ उसके अमूर्त मन में भी तो बहुत-सी बातें भर रही हैं जो अन्दर खलबली पैदा करती हैं। माता-पिता की व्यस्तता के कारण बड़े होते बच्चे का मानसिक पहलू उपेक्षित है। यदि बच्चा स्कूल में देखी-सुनी बात, घटना, चीज़ (मोबाइल, कैमरा, गाड़ी, महंगा पेन, चश्मा) आदि का जिक्र करता है तो माँ का उत्तर होता है, करने दे उन्हें, तू अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। लेकिन देखते हुए भी ना देखने की शक्ति, रीस ना करने की शक्ति, किसी बात में हीन महसूस ना करने की शक्ति वह कहाँ से लाए। माँ तर्क के साथ, उदाहरण के साथ तो समझाती नहीं कि रीस को कैसे रोके, क्रोध को कैसे मनेज करें, आकर्षण से कैसे बचें। माँ बच्चे की पहली गुरु है, तो गुरु के पास तो उसके हर प्रश्न का समाधान और सन्तुष्ट करने की शक्ति होनी चाहिए, तभी वह अच्छी गुरु सिद्ध होगी। अतः सफल मातृत्व और पितृत्व का निर्वाह करने के लिए आवश्यक है कि माता-पिता अपने बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को रुकने न दें। वे वर्तमान परिस्थिति जन्म स्कूली वातावरण, सामाजिक वातावरण का आकलन करें। वे यह

ना कहें, पढ़े तो हम भी थे, पर आज जैसी रोज़-रोज़ की नई-नई बातें हमारे पास तो थी नहीं। उन्हें बदलते समय को ध्यान में रखना पड़ेगा।

कहा जाता है, जीवन सदा सीखने के लिए है। सीखने, सिखाने, अन्दर झाँकने, बच्चों की भावनाओं को समझने में ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान काफी मददगार साबित होता है। इन शाखाओं में ईश्वरीय ज्ञान के साथ-साथ बाल मनोविज्ञान भी सिखाया जाता है। जो माता-पिता इन शाखाओं में आते हैं वे अपने बच्चों के प्रश्नों को सहज समझते हैं और उनकी जिज्ञासाओं को शान्त कर पाते हैं। एक तो उनका अपना दृष्टिकोण ज्ञानयुक्त हो जाता है, समाधान को पकड़ता है और फिर अनुभवी बहनों का मार्गदर्शन भी मिलता है। आध्यात्मिक स्नेह के वातावरण में बच्चे की एकाग्रता बढ़ती है, वह अपने को व्यर्थ बातों से हल्का महसूस करता है। इसलिए यह ना कहें कि बूढ़े तोते अब क्या पढ़ेंगे, बच्चों की संस्कारयुक्त पालना के लिए, बड़े होते बच्चे को और स्वयं को समस्याओं, प्रश्नों से पार ले जाने के लिए माता-पिता दोनों प्रतिदिन एक घन्टा ईश्वरीय ज्ञान सीखने ब्रह्माकुमारीज़ की नज़दीकी शाखा में ज़रूर जाएँ। बाल मनोविज्ञान को समझने और उनसे सामन्जस्य बिठाने का यह निःशुल्क सरलतम उपाय है।

नवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य

दशहरे से पहले लगातार नौ दिनों तक (नवरात्रि में) भारतवासी शक्तियों की पूजा करते हैं। इन शक्तियों के 108 नामों का गायन है जिनमें से कुछ प्रसिद्ध नाम – श्री सरस्वती, ब्राह्मी (ब्रह्मा की ज्ञान-पुत्री), आदि देवी, जगदम्बा, शीतला, दुर्गा आदि-आदि हैं। नवरात्रि में भक्त लोग रातभर एक दीपक जलाते हैं तथा शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक पवित्रता तथा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने का प्रयत्न करते हैं। इन्हीं दिनों में वे संस्कृत के श्लोक उच्चारित करते हुए सुने जाते हैं जिनका भावार्थ इस प्रकार होता है :-

“हे पूज्य माँ, अज्ञान-अन्धेरे ने इस समय मुझे चारों तरफ से घेर रखा है। आप मुझे ज्ञान प्रदान करो जिससे कि मेरे अन्दर और बाहर चारों ओर का अन्धेरा दूर हो जाये। इन विकारों ने मेरी बुद्धि को उसी प्रकार दूषित कर रखा है जैसे कि काले बादल आकाश को घेरे रहते हैं। आप मेरे मानसिक विचारों को शान्त कर मुझे पवित्रता, सुन्दरता, शान्ति और आनन्द का वरदान दीजिए।”

शुद्धि केवल नौ दिन ही क्यों?

भाव बहुत सुन्दर है परन्तु प्रश्न

उठता है कि यदि माँ जगदम्बा को मन, वचन, कर्म की पवित्रता और ब्रह्मचर्य बहुत प्रिय है और यदि शुद्धि सचमुच अच्छी वस्तु है और सत्य ज्ञान से ही हमें स्थायी सुख और शान्ति मिल सकती है तो क्यों न हम इन्हें केवल नौ दिनों की बजाय सदैव ही धारण किए रखें ताकि हमसे कोई विकर्म न हो? यह एक ध्यान देने योग्य बात है कि संसार में मनुष्य की महानता उसकी पवित्रता की शक्ति के अनुसार ही होती है। पवित्रता की शक्ति सत्य ज्ञान से ही प्राप्त होती है और सत्य ज्ञान तथा ईश्वरीय योग ही वह तेज तलवार है जो मानसिक विकारों को समूल नष्ट कर देती है। नवरात्रों में रात भर जो दीपक जलाये जाते हैं, धूप-अगरबत्ती आदि सुलगाये जाते हैं, उनका भावार्थ भी यही है कि हम आत्मा का दीपक सदैव जला हुआ रखें ताकि विकार हमारे पास आ ही न सकें। हम देवी गुणों की सुगन्धि करके अपने व्यक्तित्व एवं वातावरण को सदैव खुशबूदार और आध्यात्मिक बनाये रखें। केवल नवरात्रि के नौ दिनों में ही घर को साफ और सुगन्धित रखने से सरस्वती या दुर्गा हम पर प्रसन्न नहीं



होंगी, वास्तविक नवरात्रि मनाने के लिए परमपिता परमात्मा शिव द्वारा सिखाये जा रहे सहज ज्ञान और राजयोग द्वारा जीवन को पवित्र और शक्तिशाली बनायें।

शक्तियों को शक्ति किससे और कैसे प्राप्त हुई?

भक्तों का प्रायः ऐसा भी विश्वास है कि दुर्गा तथा अम्बा में आत्मिक शक्ति का प्रादुर्भाव ब्रह्मा, विष्णु और शंकर या विशेष तौर से स्वयं परमात्मा ज्योतिर्लिंगम 'शिव' से ही हुआ। अतः इन शक्तियों का दूसरा नाम “शिवमयी शक्तियाँ” भी है। शक्तियों के जो ब्राह्मी, कुमारी, विद्या, ज्ञाना आदि मुख्य नाम हैं उनसे सिद्ध है कि शक्तियों का आध्यात्मिक जन्म उस समय हुआ था जबकि

परमात्मा शिव ने उन्हें ज्ञान-प्रकाश दिया था और जबकि पवित्र देवी सृष्टि का निर्माण हो रहा था। अतः आदि देवी को ही आर्या, श्रेष्ठा या देव-माता भी कहते हैं। उनके अन्य नाम तपस्विनी, सर्व-शास्त्रमयी (सर्वशास्त्रों के रहस्य को जानने वाली), त्रिनेत्री, विमला, सत्या आदि भी हैं। इन शक्तियों का कल्याणकारी परमात्मा शिव के साथ निरन्तर और गहरा आत्मिक प्रेम और योग था और उन्होंने परमात्मा का जग-कल्याणकारी ‘पवित्र और योगी’ बनने का सन्देश सारे जगत में फैलाया था। इसी कारण इन्हें ‘भव प्रिया’ (शिव को प्यारी) और शिवदूता (शिव का सन्देश देने वाली) आदि-आदि नामों से भी याद किया जाता है।

ईश्वरीय वर्सा मिलता है ईश्वर से सम्बन्ध जोड़ने से

यह तो सत्य है कि आज भी अनेक भक्त सरस्वती और दुर्गा के प्रति अपने हृदय में अटूट श्रद्धा रखते हैं और जब वे ‘अम्बा’ शब्द का उच्चारण करते हैं तो उनका हृदय श्रद्धा और प्रेम से द्रवित हो उठता है। परन्तु आश्चर्य की बात है कि कुमारी होते हुए भी सरस्वती को ‘जगदम्बा’ क्यों कहते हैं तथा उनकी वास्तविक जीवन कथा क्या है, आज इस रहस्य को कोई नहीं जानता। एक बच्चे के लिए अपने माता-पिता को जानना आवश्यक है। उनके साथ श्रद्धापूर्वक

व्यवहार करने से और चरित्र को ठीक बनाने से ही वह उनकी सम्पत्ति का अधिकारी बनता है, ठीक इसी प्रकार ईश्वरीय खजाना (आध्यात्मिक शक्ति) भी उन्हीं मनुष्यात्माओं को मिल सकता है जो परमात्मा को यथार्थ जानकर उनके साथ निरन्तर योग-युक्त रहते हैं। जैसे बच्चा अपने बाप की आज्ञानुसार चलकर वर्सा लेता है, न कि उनकी पूजा करके, इसी प्रकार हमें भी परमपिता परमात्मा की आज्ञानुसार पवित्र और गुणवान बनने से ही उनकी ईश्वरीय सम्पत्ति मिलेगी, न कि उनकी पूजा-अर्चना करने से।

सरस्वती जी को ‘जगदम्बा’

कहने का कारण

सतयुग के आदि और कलियुग के अन्त के सुहाने संगम समय में परमात्मा शिव ज्ञान द्वारा आदि देव ब्रह्मा और आदि देवी सरस्वती की उत्पत्ति (रचना) करते हैं। मातेश्वरी सरस्वती विकारी मनुष्यों को निर्विकारी बनाने का पुरुषार्थ करती हैं और इस प्रकार उन्हें नया आध्यात्मिक जन्म देती हैं। इसी भाव से सरस्वती को, कन्या होते हुए भी, ‘जगदम्बा’ (जगत की माता) कहते हैं।

सरस्वती जी के अलंकार

सरस्वती जी के हाथ में वीणा दिखाने का तथा उनकी हंस की सवारी दिखाने का भी आध्यात्मिक अर्थ है। जैसे वीणा की मधुर झंकार सुनकर मन बहलाव होता है ऐसे ही

सरस्वती माँ ने ज्ञानामृत की मधुर वाणी सुनाकर अशान्त एवं दुखी मनुष्यों को आधा कल्प के लिए सम्पूर्ण सुख-शान्ति प्रदान की थी। जैसे हंस क्षीर-नीर को अलग करने की क्षमता रखता है वैसे ही सरस्वती जी को भी सद्विवेक प्राप्त था और वे भी ज्ञान-गुण रूपी मोती ही चुगने वाली एवं उत्तम स्थिति वाली थीं। वे कलियुगी विकारी संसार में रहते हुए भी पवित्र थीं, इस कारण उन्हें श्वेत कमल पर खड़ा हुआ भी चित्रित किया जाता है। उन्होंने परमात्मा शिव से प्राप्त ज्ञान और गुणों के आधार पर अन्य मनुष्यात्माओं को भी कमल पुष्प के समान पवित्र अथवा हंस के समान सद्विवेकी बनाया था।

भक्त लोग शक्तियों (दुर्गा, काली आदि) के हाथ में तलवार, खड़ग, तीर, कमान आदि-आदि अस्त्र-शस्त्र भी दिखाते हैं जिनका कि आध्यात्मिक भावार्थ है। वास्तव में शक्तियों ने शस्त्रों से कोई हिंसक लड़ाई नहीं लड़ी थी बल्कि ईश्वरीय ज्ञान की तलवार, मधुर वाणी की कमान, सत्यता के तीर तथा योग व निश्चिन्त स्थिति की ढाल आदि द्वारा महाबलवान असुरों (पाँच विकारों) को खत्म किया था तथा अन्य लोगों को भी इन विकारों पर जीत पाने की प्रेरणा दी थी। अतः इन मनोविकारों को जीतने का पुरुषार्थ करना ही सच्चे अर्थों में नवरात्रि मनाना है। ❖

रंग अलग लेकिन रंगत एक

* ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश, आवू पर्वत

मई-जून 2014 में बाबा की सेवा अर्थ मुझे दक्षिण अफ्रीकी देशों – इथोपिया, नाइजीरिया, घाना, आइवरी कोस्ट, बेनिन, टोगो तथा बाल्टिक देशों – लातविया, इस्टोनिया और लिथुआनिया (कुल 9 देश) में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसा महसूस हुआ कि बाबा के ज्ञान की प्यासी आत्माएँ यहाँ-वहाँ अभी भी छिपी हुई हैं। भले चमड़ी के रंग सभी के भिन्न-भिन्न हैं लेकिन भावनाएँ सबकी एक ही हैं।

सभी देशों में पब्लिक कार्यक्रम, रेडियो व टी.वी. इण्टरव्यू, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ आदि आयोजित हुईं और प्रश्नोत्तर भी रखे गये। प्रस्तुत हैं कुछ चुने हुए प्रश्न और उनके उत्तर –

प्रश्न:- इथोपिया में एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने पूछा, आजकल परिवार में सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं, घर में एक-दूसरे की कमियाँ देखना और बात-बात में नोंक-झोंक होना आम बात हो गई है। घर का वातावरण भारी रहता है और हमारा बच्चा भी बहुत चिड़चिड़ा हो गया है, कृपया समाधान सुझायें?

उत्तर:- एक-दूसरे की कमियों को देखने से और अपनी बात दूसरों पर थोपने से कटुता बढ़ती है। राय जरूर दें, समझायें भी, मानें तो अच्छा, नहीं

मानें तो हरेक का अपना-अपना पार्ट है। ड्रामा के रहस्य को समझना है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना पार्ट एक्ज्यूट बजा रहा है। शुभभावना रखने, विशेषताओं को देखने, सहयोगी बनने से कड़वाहट दूर हो जाती है, आत्मीयता बढ़ जाती है जिससे हम एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं। इससे घर का वातावरण भी अच्छा होगा और बच्चों का स्वभाव भी मृदु हो जायेगा।

प्रश्न:- नाइजीरिया में एक महिला ने पूछा कि सांसारिक प्राप्ति के आधार पर मुझे क्षणिक खुशी तो मिलती है लेकिन सदा प्रसन्न रहने का कोई उपाय बतायें?

उत्तर:- खुशी मंजिल नहीं है अपितु एक यात्रा है। प्रसन्नता का सम्बन्ध आमदनी, पद, वैभव व बाहरी साधनों आदि से नहीं है। सदैव खुश रहने के लिए दूसरों की दिल से सेवा करना आवश्यक है। दुआएँ हमें सदा खुश रखती हैं। पुराने ज़माने में लोग एक-दूसरे की मदद करते थे, अपनी बातें दूसरों के साथ साझा करते थे। परिणामस्वरूप वे बहुत प्रसन्न रहते थे। वास्तविकता यह है कि प्रसन्नता आत्मा का मूल गुण है। हम जैसे ही आत्मिक-स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तो आंतरिक खुशी स्वाभाविक रूप से

अनुभव होने लगती है। राजयोग का अभ्यास हमें आत्मिक अनुभूति कराता है जिससे हमारा जीवन सदाकालिक खुशियों से भर जाता है।
प्रश्न:- आइवरी कोस्ट के व्यापारी ने पूछा, तनाव और अनिद्रा से बचने के उपाय बताइये?

उत्तर:- तन में आना माना तनाव में आना। अनिद्रा का कारण है सिर पर नकारात्मकता का बोझ। करेक्शन, कॉम्पीटीशन और कम्पेरिजन (दूसरों को सुधारना, गला-काट प्रतियोगिता में आना और दूसरों से तुलना करना) भी तनाव के बड़े कारण हैं। अनुभव कहता है कि हम दूसरों को बदलने के बजाय स्वयं को परिवर्तन करें। स्वयं को सदैव विशेष समझें। अपनी तुलना कभी भी दूसरों से न करें। तनाव से बचने का सहज चिन्तन है – मैं चैतन्य शक्ति आत्मा हूँ, यह शरीर मेरा माध्यम मात्र है। मैं ट्रस्टी हूँ, करावनहार परमात्मा है। मोबाइल, नैट, टी.वी. आदि सोने से 10-15 मिनट पूर्व बंद कर दें तथा स्वयं-ही-स्वयं से बातें करें। सारी बात पिता परमात्मा को बता कर हल्के होकर सो जायें तो गहरी नींद आयेगी।

प्रश्न:- घाना में एक महिला ने पूछा कि आज चारित्रिक गिरावट चरम सीमा पर है। जिन लोगों का चरित्र गिरा हुआ



नाइजीरिया (लागोस) - 'विषम परिस्थिति में स्वयं को एकरस रखने की विधि' विषय पर प्रवचन के बाद ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश भाई, ब्रह्माकुमारी रेवा बहन एवं अन्य ग्रुप फोटो में।

है, वही उन्नति करते नज़र आते हैं, उन्हें सबका समर्थन भी सहज मिल जाता है। चरित्रवान व्यक्ति जीवन की दौड़ में पीछे रह जाते हैं, कृपया कोई समाधान सुझायें?

उत्तर:- चारित्रिक पतन का प्रमुख कारण देहभान है। आज हर चीज़ बिकाऊ है। जितना भद्दा विज्ञापन होगा, उसे उतना ही अधिक लोग देखेंगे लेकिन यह तो समस्या का एक पहलू है। वास्तविकता यह है कि उल्टे कार्य करके हो सकता है कोई क्षणिक प्राप्तियाँ कर भी ले लेकिन सदाकालिक उपलब्धियों के लिए कोई भी शॉर्टकट नहीं है। हमें मेहनतकश बनना ही है, इसके लिए हमें चरित्र श्रेष्ठ बनाना ही होगा। जितना आत्म-अभिमानि होकर रहेंगे, उतना ही चरित्र श्रेष्ठ होगा। अच्छा साहित्य, अच्छे व्यक्तियों का संग तथा भोजन की शुद्धि से चारित्रिक उन्नति होती है। आज

सामाजिक रूप से हमें चरित्र की महत्ता उजागर करने की आवश्यकता है। चरित्र जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है। यदि चरित्र गया तो सब कुछ चला गया, जब यह संदेश चारों ओर जायेगा तो चारित्रिक उत्थान न हो, ऐसा हो नहीं सकता!

प्रश्न:- टोगो में एक युवती ने पूछा, इण्टरनेट, फेसबुक, व्हाटस अप आदि पर बहुत समय चला जाता है, कृपया छूटने का उपाय बतायें?

उत्तर:- विज्ञान के साधनों के उपयोग से हमारे समय और परिश्रम की काफी बचत हो गई है लेकिन साधनों पर अत्यधिक निर्भरता ने हमें पंगु बना दिया है। आँखें कमज़ोर हो जाती हैं, दिमाग भी कमज़ोर हो जाता है। ऐसे लोगों को न परिवार से कोई लेना-देना, न कोई और ज़िम्मेवारी। मैं समझता हूँ, हम अपने जीवन को संतुलित बनायें और एक लक्ष्मण रेखा खींच लें कि इससे अधिक मुझे इन

साधनों का उपयोग नहीं करना है। हम साधनों का प्रयोग करें और मनुष्यों को प्यार करें। साधन किसी भी हाल में साधना को कम न कर दें, यह ध्यान अवश्य रखना है।

प्रश्न:- बेनिन में एक व्यक्ति ने पूछा कि बचपन में सुना था, भगवान के बताये रास्ते पर न चलने से वह सज़ा देता है, मैं भयवश भगवान को याद करता हूँ। आप कहते हैं, प्रभु को प्रेम से याद करो। भय छोड़ परमात्मा को प्रेम से याद करने की विधि बतायें?

उत्तर:- हमने ब्रह्माकुमारीज़ में आकर यह जाना है कि ईश्वर तो हमारा पिता है। कोई भी बाप अपनी संतति को दण्ड नहीं देता। हाँ, कर्मों की गति का सिद्धांत ऐसा है कि जैसा कर्म मैं करता हूँ, उसका वैसा ही फल मुझे मिलता है। अतः हम भय को छोड़ परमात्मा को प्रेम से याद करें, उसे अपना दिलबर-रहबर बना लें। मन में कोई भी उलझन हो तो ईश्वर के साथ साझा

करें। कहने में आता है कि सच्चे दिल पर साहब राज़ी। तो साहब परमात्मा पिता को खुश करने की एकमात्र विधि है – सच्चे मन से उसका स्मरण और सम्बन्ध सहित उसकी याद।

प्रश्न:- लिथुआनिया में एक कर्मचारी ने पूछा कि मेरी बॉस के साथ बनती नहीं है। वह चापलूसी पसन्द करते हैं जबकि मैं ईमानदारी से कार्य करने में विश्वास करता हूँ। पिछले वर्ष मेरी प्रमोशन भी रुक गई, इससे मुझे भविष्य के विषय में भय-सा रहने लगा है, कृपया कोई उपाय बतायें?

उत्तर:- हमें यह जानना होगा कि हरेक आत्मा इस विश्व रंगमंच में पार्टधारी है। मैं किसी दूसरे के पार्ट को बदल नहीं सकता हूँ, हाँ अपने पार्ट को बखूबी बजाना मेरे अपने हाथ में है। कहते हैं, बॉस सदैव ठीक होता है। अतः सबसे पहले अपने मन से इस बात को निकाल दें कि मेरा बॉस खराब है। हर दिन यह चिन्तन करें कि मेरा बॉस बहुत अच्छा व्यक्ति है। उसकी अच्छाइयों को हमेशा ध्यान में रखें और उनका ही वर्णन करें। हमने बॉस को जान लिया अब उनके साथ उसी तरह से पेश आना है। याद रखें, मेरा कोई कर्मों का हिसाब-किताब है जो चुक्ता हो रहा है। थोड़े समय में सब कुछ ठीक हो जायेगा।

प्रश्न:- नाइजीरिया में एक व्यक्ति ने पूछा कि मैं प्राइवेट कम्पनी में जॉब करता हूँ, कमरतोड़ महंगाई के कारण परिवार का खर्चा बहुत है।

मुझे बैंक से कर्ज़ लेना पड़ा, पैसे की अदायगी नहीं कर पाया तो बैंक ने मेरा घर जब्त कर लिया है, बहुत परेशान हूँ, इस विकट समस्या से निपटने की कोई राह बतायें?

उत्तर:- महंगाई आज विश्वव्यापी है। महंगाई में भी परिवार का संतुलन बना रहे इसके लिए हमें वित्तीय प्रबन्धन सीखने की आवश्यकता है। भारत में एक कहावत है, उतने पैर पसारिये जितनी लम्बी खोर अर्थात् सदैव हमारी आय और व्यय का संतुलन बना रहे। कई ऐसे खर्चें होते हैं जो कम किये जा सकते हैं लेकिन दिखावे के वश अथवा सामाजिक सरोकार का

वास्ता देकर हम उन्हें कम नहीं करना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि आप हिम्मत न हारें। परिवार के अन्य सदस्य भी काम करें ताकि आय बढ़े। आप पहले बैंक ऋण की अदायगी करें ताकि आपका घर आपको वापिस मिल जाये। ध्यान रखें, हरेक कठिनाई कुछ न कुछ सिखाने के लिए ही आती है। यह आपका परीक्षा काल चल रहा है। कोई भी इम्तिहान जिंदगी भर नहीं चल सकता है। यदि आज कोई संकट की घड़ी है तो कल अच्छे दिन आने ही हैं। हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। ❖

बन्दर, बच्चा और बाबा

ब्रह्माकुमार अशोक कुमार, मडलौडा

अप्रैल, 2012 की एक सायंकाल के 5 बजे कुछ बच्चे घर की छत पर खेल रहे थे। वहाँ बन्दर आ गये, मेरे बच्चे (10 वर्षीय अंकित कुमार) को छोड़कर बाकी सारे बच्चे सीढ़ियों से नीचे उतर आये। बंदरों ने उसे घेर लिया। उसने दो मंजिल ऊँची छत से छलांग लगा दी, नीचे पक्का फर्श था, वह फर्श पर उल्टा गिरा। उसके ऊपर के दांत टूट गये, मुँह से खून की गांठें गिरने लगी। तुरंत पानीपत में हास्पिटल में लेकर गये। बाबा की शक्ति देखो, दाँतों के दो सर्जन, हड्डी का सर्जन, नाक का सर्जन, बेहोश करने वाला डाक्टर – सारे वहाँ पहले से ही मौजूद थे। जल्दी-जल्दी सी.टी.स्कैन, एम.आर.आई. आदि करके उसको ऑपरेशन थिएटर ले जाया गया। बच्चे के दोनों हाथ टूट गये थे, एक पैर पंजे के पास से टूट गया था। वह ऑपरेशन तक बिल्कुल होश में रहा। इक्कीस दिन आई.सी.यू. में रहा। तीन महीने में पैर नीचे रखा। आश्रम के सारे भाई-बहनों तथा निमित्त बहन के योग द्वारा बच्चा बिल्कुल ठीक हो गया। आज वह साइकिल चलाता है। दांत उसके बाद में चढ़ेंगे। बाबा ने मानो बच्चे को अपनी गोद में बिठा लिया था। ❖

हजारों भुजाओं वाले बाबा बने मददगार

* ब्रह्माकुमारी पूनम, गुरावड़ा (रेवाड़ी)

मुझे बचपन से ही पूजा-पाठ, व्रत आदि का बहुत शौक था और भगवान में बहुत आस्था थी, जो 18 मई, 2009 को पूरी हुई। मुझे पता चला कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बहनें ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर भगवान से भी मिला देती हैं। अधिक उत्सुकता हुई तो मैं नज़दीक के सेवाकेन्द्र पर पहुँच गई जहाँ से मैंने 7 दिन का कोर्स पूरा किया। अब मेरे ही गांव में गीता पाठशाला खोली गई है जहाँ 30 से 50 तक नियमित भाई-बहनों की क्लास चलती है और मैं आत्मा निमित्त बन वहाँ सेवा करती हूँ।

बीस अक्टूबर, 2012 को मेरे युगल शिवम कुमार, जो वर्तमान समय वाटर सप्लाई विभाग, रेवाड़ी में कार्यरत हैं, अचानक ड्यूटी के दौरान ज़मीन पर गिर पड़े। उस समय उन्हें अहसास नहीं हुआ कि शरीर में कोई आन्तरिक गम्भीर चोट लगी है। जब शाम को घर आये तो काफी तकलीफ महसूस होने लगी। मैं तुरन्त उन्हें रेवाड़ी के सरकारी अस्पताल में ले गई लेकिन वहाँ के डाक्टरों ने चेक करके जवाब दे दिया कि इन्हें ऐसी बीमारी है जिसका इलाज इस

अस्पताल में नहीं होता और साथ में यह भी बता दिया कि यदि 24 घन्टे के अन्दर आपरेशन नहीं हुआ तो बहुत मुश्किलें बढ़ जायेंगी। उन्होंने वहाँ से पी.जी.आई. रोहतक के लिए रैफर कर दिया। उस दिन से आगे लगातार तीन दिन की सरकारी छुट्टियाँ पड़ गई थीं। फिर भी मैं बाबा को याद करके, हिम्मत बांध कर उन्हें पी.जी.आई. रोहतक ले आई। डाक्टरों ने कहा, आपरेशन ज़रूरी है लेकिन तीन दिन के बाद होगा और खर्चा भी काफी आयेगा।

बोझ बाबा के हवाले कर दिया

मुझे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था लेकिन लगता था, हजारों भुजाओं वाला सर्जनों का सर्जन बाबा मेरे साथ है। ख्याल आया कि यहाँ तीन दिन कुछ भी होने वाला नहीं, पैसे भी पास नहीं और आपरेशन के लिए निर्धारित समय भी निकला जा रहा है इसलिए मैं अपने पति को वापिस रेवाड़ी ले आई। मैं अपना सारा बोझ बाबा के हवाले कर सिर्फ निमित्त बनकर चल रही थी। सरकारी अस्पताल के डाक्टर से मैंने कहा कि आप ही सरकारी खर्च पर मेरे पति का आपरेशन करा दो, रोहतक आपने भेजा था पर तीन दिन की



छुट्टियाँ पड़ गई हैं इसलिए वापिस आ गई हूँ। डाक्टर ने कहा, मैं पहले ही कह चुका हूँ, यहाँ इस तरह के केस का इलाज नहीं होता, जितना जल्दी हो सके इन्हें डाक्टर राकेश नथानी, जो प्राइवेट अस्पताल में न्यूरोलोजिस्ट हैं, के पास ले जाओ। वहीं आपरेशन होगा परन्तु एक बात और बता दूँ कि डाक्टर नथानी कोई गारन्टी नहीं लेगा क्योंकि इस तरह के मरीज़ का आपरेशन आज तक उनके अस्पताल में भी सफल हुआ नहीं है।

ओ.टी.के कोने में योगयुक्त हो गई

उपरोक्त बातों से मैं निराश ज़रूर हुई पर हिम्मत नहीं हारी। न्यूरोलोजिस्ट ने कहा, हमारे पास सिर्फ सात घण्टे का ही समय बचा है इसलिए मरीज़ को भर्ती कराओ तथा पैसे भी जमा करा दो। एक घन्टा बीत

जाने के बाद सगे-सम्बन्धी पहुँचने लगे और पैसों का इन्तज़ाम होने लगा। इसके बाद डॉ. नथानी ने मेरे पति को आपरेशन थिएटर (ओ.टी.) में जाने को कहा। वे ओ.टी. टेबल पर जाकर लेट गये। मैंने तुरन्त बाबा का लाकेट, जो मेरे गले में था, पति की पाकेट में डाल दिया और कहा, बाबा, जब तक इनका आपरेशन चले तब तक कोई घबराहट नहीं आनी चाहिए और आपरेशन सफल होना चाहिए। मैं वहीं ओ.टी. में एक कोने में मौन रहकर बाबा से योग लगाने लगी, डाक्टरस नहीं चाहते थे कि मैं वहाँ बैटूँ।

आपरेशन सफल हुआ

जब तक आपरेशन चलता रहा, मैं ओ.टी. में बाबा से योग लगाती रही। काफी देर बाद एक डाक्टर आकर बोले, बहन जी आपके पति का सफल आपरेशन हो गया है। अब इन्हें आराम हो जायेगा और कम से कम 6 महीने आराम करना होगा। मैंने मन ही मन शिवबाबा का शुक्रिया किया और कहा, बाबा, आपका यह अहसान कभी नहीं भुलाया जा सकता। शिवबाबा के आशीर्वाद व प्यार से अब मेरे पति ठीक हो गए।

राजयोग ने किया चमत्कार

अस्पताल से घर चलने के दिन पति ने डाक्टर साहब से कहा, आप मेरे लिए भगवान हैं, जो मुझे मौत के मुँह से निकाल कर ले आये। तब

डाक्टर ने कहा, भगवान मैं नहीं, आपकी पत्नी भगवान से जुड़ी हुई हैं। इन्होंने अकेले ही इतनी मुसीबतों का सामना करके समय पर आपरेशन करा लिया और मैंने देखा, पूरे समय वह भगवान से ही योग लगाती रही, यह चमत्कार इन्होंने किया है। उन्होंने आगे कहा, आज तक के मेरे 25-30 साल के अनुभव में इस बीमारी का

कोई मरीज़ जिन्दा नहीं बच पाया। आप भाग्यशाली हैं, इस तरह की बीमारी का यह मेरा पहला सफल आपरेशन है।

अब मेरी खुशियाँ वापिस लौट आई हैं। मेरे व मेरे परिवार का जीवन, प्यारे बाबा के ज्ञान ने धन्य-धन्य कर दिया है। बाबा और समस्त दैवी परिवार की सदा आभारी रहूँगी। ❖

ज्ञानामृत पढ़कर लौट आई खुशी

ब्रह्माकुमारी मीना बहन, चालीसगाँव

बात पच्चीस वर्ष पुरानी है, हम जिला भंडारा के पवनी गाँव में रहते थे। बहुत ही निकट संबंधी द्वारा कहे गये कटु वचनों द्वारा मन बड़ा आहत था। न दिन में चैन था, न रात में नींद आती थी। मेरे पड़ोस में रहने वाली बहन के यहाँ एक ब्रह्माकुमारी बहन आयी, उसने मुझे ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने के लिए दी। पत्रिका के लेख पढ़कर बड़ी शान्ति और सुकून मिला, रात में नींद भी आने लगी। लेख थे, “ड्रामा का राज”, “कर्मों की गुह्य गति” आदि। इन्हें पढ़कर मन बड़ा निश्चित हो गया, खुशी लौट आयी। तब से मैं ज्ञानामृत की नियमित पाठक बन गई और कुछ वर्षों बाद बाबा की सच्ची बच्ची बन गई, नियमित ज्ञान में चलने लगी। अब तो अपनी सभी समस्याएँ बाबा पर छोड़ देती हूँ, बाबा सब संभाल लेते हैं। कई बार बाबा से मिलन भी मना चुकी हूँ और वह सब कुछ पा चुकी हूँ जो बाबा से हर रिश्ते में चाहिए था। पाना था सो पा लिया, अब न कुछ बाकी रहा।

सभी पाठकों से निवेदन है कि यह पत्रिका संबंध, सम्पर्क, जाने, अनजाने जो भी मिलें, सभी को पढ़ने के लिए देते रहें। जिस तरह मेरी खुशी लौट आयी, मुझे खुशियों भरा जीवन मिला, जीवन में दिव्यता आ गई, इसी तरह न जाने कब, कहाँ, किस की खुशी इसे पढ़कर लौट आये और वे बाबा के बन जायें। ❖

सार्वभौमिक बंधुत्व का आधार मित्रता

* ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

भीड़ भरे बाज़ार में परेशान व्यक्ति को यदि दूर से मित्र आता दिख जाए तो होठों पर मुसकान आ जाती है और यदि किसी समारोह में हंसते हुए व्यक्ति को शत्रु दिखाई पड़ जाए तो हंसी गायब हो जाती है। मित्र की मौजूदगी, सभामें बैठे व्यक्ति का ध्यान उतना नहीं खींचती जितना कि शत्रु की मौजूदगी ध्यान खींचती है। यदि अन्तर्मन में सर्व के प्रति मित्रता का भाव समाया हो तो मनःस्थिति सदैव मुसकान भरी होगी। सतयुग में जिधर देखो सभी मित्र (बंधु) ही दिखाई देते हैं। राजयोग के ज्ञान व प्रयोग से सतयुगी मनःस्थिति वर्तमान के कलियुग में भी धारण की जा सकती है। जो सतयुग पहले मित्रयुग था, वह गिरावट में आते-आते अब मानो शत्रुयुग हो गया है। आज मित्रता देखने में तो आती है परन्तु यह है व्यभिचारी मित्रता जिसमें मित्रों के बीच में स्वार्थ व लाभ लेने का भाव अन्तर्मन में समाया रहता है। आज मित्रता के आवरण में एक स्वार्थी मनुष्य दूसरे का दोहन करता है, उससे जैसे-तैसे फायदा उठाने की जुगत में रहता है और मित्रता के रिश्ते को बदनाम करता है।

निन्दा में भी छिपा है कल्याण
कहा गया है, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सो। निन्दा में भी कल्याण छिपा है क्योंकि इससे सहनशक्ति बढ़ती है, अपने अवगुणों या कमियों पर नज़र पड़ती है, कार्य की गुणवत्ता में इज़ाफा होता है और पता चलता है कि हमारे कौन-से ऐसे विरोधी मित्र हैं, जिन्हें अतिरिक्त स्नेह दिया जाना है। जिनके निन्दक होते हैं उनमें सकारात्मक परिवर्तन की संभावना ज्यादा होती है। दर्पण मात्र सामने का मुख दिखलाता है, पीठ नहीं परन्तु निन्दा तो पीठ-पीछे होती है और यह दिखलाती है कि आत्मा कैसी है। निन्दा, निन्दक और जिसकी वह निन्दा करता है, दोनों की ही कमियां दिखलाती है। निन्दित व्यक्ति में इतनी तो सूक्ष्म कमी होगी ही कि वह ईश्वर प्रदत्त प्रेम के गुण के होते हुए भी निन्दा करने वाले के दिल को जीत न सका।

मित्र वो, जो निखरे और निखारे

यदि कोई चाहता है कि उसके मित्रों की संख्या बढ़े, तो उसे चाहिए कि अन्य लोगों को वह अपने से आगे निकल जाने दे। इससे प्रत्यक्ष रूप में तो दूसरे उससे आगे दिखेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप में वह औरों से आगे

होगा। ईश्वरीय ज्ञान कहता है कि औरों को आगे बढ़ाना ही आगे बढ़ना है या देना ही लेना है। आज औरों से आगे निकलना, ईर्ष्यालुओं (शत्रुओं) की संख्या के बढ़ने का कारण बनता है। तो श्रेष्ठ यही है कि दूसरों को आगे किया जाए। सच्चा सुख जीतने में नहीं बल्कि जिताने में है, लेने में नहीं बल्कि देने में है। यदि दूसरों को विकार मुक्त बनाने की रूहानी सेवा की जाए, तो दूसरों के परिवर्तन होते ही निमित्त व्यक्ति के व्यक्तित्व में और भी निखार आता है और किसी को बुरा भी नहीं लगता। खार (जलन, वैर) और निखार (निर्मलता, स्वच्छता) व्यक्तित्व के दो विपरीत पहलू हैं। मित्र वो, जो निखरे और निखारे।

भाना और निभाना

दो शब्दों का काफी प्रचलन है, जो हैं भाना व निभाना। भाना अर्थात् जो मन को अच्छा लगे, उसे आकर्षित करे। निभाना अर्थात् मन के न चाहते हुए भी, या विकर्षण होते हुए भी किसी से सामान्य सम्बन्धों की औपचारिकता बनाए रखना। ट्रेन में सहयात्री अनुकूल न हो, तो भी आपको उसके साथ बैठना, निभाना होता है। पड़ोसी को बदला नहीं जा

सकता अतः वह जैसा भी है, उससे संबंध निभाना होता है। इसमें बुद्धि की सात्विकता, मन की निर्मलता और पर-कल्याण की भावना सूक्ष्म कार्य करती है। श्रेष्ठ I.Q. (Intelligence Quotient) से संबंध बनते हैं, परीक्षाओं में सफल हो जाते हैं व नौकरी मिल जाती है परन्तु श्रेष्ठ E.Q. (Emotional Quotient) से संबंध निभाए जाते हैं और नौकरी बनी रहती है।

सहयोग मित्रता का प्राण है। सहयोग अर्थात् मित्रों की अपनी अलग-अलग विशेषताएं या कमजोरियाँ होते हुए भी एक साथ आगे बढ़ कर जीवन में उपलब्धियाँ हासिल करना। दो मित्र थे, जिनमें एक लंगड़ा था और दूसरा अंधा। जब कहीं जाना होता था, तो अंधा अपने लंगड़े मित्र को कंधे पर बैठा लेता था और फिर लंगड़ा अपने अंधे मित्र को सामने का रास्ता दिखाता रहता था। इस प्रकार उनकी मित्रता ने आपसी सहयोग से शारीरिक अपंगता को रुकावट नहीं बनने दिया। बड़े-बड़े कार्य सहयोग की शक्ति से पूरे किए जाते हैं।

ईश्वर को पसंद है बेहद का मैत्रीभाव

पहले पेन फ्रेंड बनाने का चलन हुआ करता था। अब फेसबुक के द्वारा या इन्टरनेट के द्वारा मित्रता की

जाती है। परन्तु यह मित्रता नहीं बल्कि समय की फिजूलखर्ची या मित्रता के नाम पर ठगी करना है। इसके विपरीत, संसार के समस्त प्राणियों के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना व मित्रता के प्रकंपनों का संप्रेषण करना कल्याणकारी कर्म है जिससे कल्याणकारी ईश्वर की मित्रता स्वतः प्राप्त हो जाती है। ऐसे व्यक्ति के मन में एक से बढ़ कर एक सुन्दर संकल्प व आन्तरिक खुशी हिलोरें मारती रहती है क्योंकि उसे ईश्वर के प्रेममय प्रकंपन प्राप्त होते रहते हैं। हम अपने सामर्थ्य अनुसार अपने आस-पास के प्राणियों का कल्याण करते रहें, तो ईश्वर की नज़र हम पर इस भाव से पड़ती है कि मेरे कल्याण के कार्य में सहयोगी यह बच्चा कितना प्यारा है। ईश्वर हमें आस-पास महसूस होगा। बस ईश्वर की नज़र में आने के लिए बेहद का मैत्रीभाव चाहिए।

सच्ची मित्रता है वटवृक्ष की तरह

झूठी मित्रता कद्दू (gourd) की बेल की तरह होती है, जो उस दीवार को ही कमजोर कर देती है जिस पर वह फलती-फूलती है। परन्तु सच्ची मित्रता तो उस वटवृक्ष की तरह होती है जिसके नीचे उसे रोपने वाले की कई पीढ़ियाँ छाया व पनाह पाती हैं। वटवृक्ष पर सब्जियों की बेल फैल जाए तो इसे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसी

प्रकार वसुधैव कुटुंबकम् की मनोवृत्ति वाले सेवाधारी के चाहे कितने भी ईर्ष्यालु व विरोधी पीछे पड़ जाएं, उसे फर्क नहीं पड़ता। शिव बाबा की ग्लानि किए जाने पर भी उनका कल्याणकारी कार्य सभी को ऊँचा उठाता है।

सिकंदर की विश्व-विजय नहीं, विश्व-पराजय

आर्थिक स्थिति में समानता न होने पर भी श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता की मिसाल आज भी दी जाती है। सुग्रीव और श्रीराम की मित्रता का आधार साझा मित्र हनुमान और साझा शत्रु रावण था। शत्रु अर्थात् सात त्रुटियाँ अर्थात् आत्मा में निहित सात मौलिक गुणों का कार्यरत न होना। यदि ये कार्य करने लगें, तो सभी मित्र दिखाई देंगे। मित्रता वो, जो मन को भाए। सिकन्दर विश्व विजय पर नहीं बल्कि विश्व-पराजय पर निकला था क्योंकि वो तो विश्व में शत्रुता का साम्राज्य फैलाता जा रहा था। जब दूसरे उसे विजयी मानते, तब ही वह विजेता कहलाता परन्तु उसे सभी मन से शत्रु मानने लगे थे। सभी के दिल को जीतना ही विजय प्राप्त करना है, जो कि सिकन्दर नहीं कर सका। उसकी अकाले मृत्यु करोड़ों सताए गए मनुष्यों के दिल से निकली बद्-दुआओं के कारण हुई थी।

(क्रमशः)

गहराता मूल्य-संकट तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली

* डा. अजीत सिंह राणा, रोहतक

एक सभ्य व आदर्श समाज में मानवीय, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को सराहा तथा अपनाया जाता है। मूल्य मानवीय व्यवहार के ऐसे सिद्धान्त या मापदण्ड होते हैं जो श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। जो व्यक्ति इन्हें अपनाते हैं वे अपने जीवन से सन्तुष्ट और प्रसन्न रहते हैं तथा समाज का हृदय भी जीत लेते हैं। इस प्रकार ये मूल्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माण तथा विकास करते हैं। इनको अपनाने वाले लोग अन्य लोगों के लिए आदर्श पुरुष बन जाते हैं जैसे श्रीकृष्ण, श्रीराम, महात्मा बुद्ध, महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री आदि।

इसके विपरीत जो लोग मूल्यों को जीवन में नहीं अपनाते वे विभिन्न प्रकार के भ्रष्ट कर्म करते ही रहते हैं तथा कर्म-भ्रष्ट, धर्म-भ्रष्ट व व्यवहार-भ्रष्ट समाज का निर्माण कर रहे होते हैं। ऐसे व्यक्तियों पर सदा भय, चिन्ता, शोक, रोग, सज़ा आदि के बादल मंडराते रहते हैं तथा दुखों के पहाड़ टूटते रहते हैं। वे सूखे कांटों की तरह होते हैं, खुद भी दुखी रहते हैं तथा दूसरों को भी सदा दुखी करते रहते हैं। ऐसे लोग मनुष्य-जीवन के लक्ष्य (देव पद प्राप्ति)

से भटक जाते हैं तथा ऐसा जीवन जीना एक घाटे का सौदा बन जाता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा मूल्य

मूल्यों के इतने ऊँचे महत्त्व को देखते हुए इनको शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए ताकि आदर्श समाज का निर्माण हो सके। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए भारत सरकार द्वारा गठित अनेक आयोगों तथा समितियों की सिफारिशें रही हैं कि कुछ मानवीय तथा वैश्विक मूल्य जैसे सत्य, शान्ति, प्रेम, सहयोग, न्याय आदि को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाये लेकिन ऐसा नहीं हो सका या आवश्यकता की तुलना में नाममात्र ही हुआ।

वृत्त वर्ष पूर्व यूनेस्को (UNESCO) ने जैक्वेश डलैर्स की अध्यक्षता में शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए गठित एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोग की सिफारिशें चार स्तम्भों में विभाजित की – 1. जानने के लिए शिक्षा, 2. करने के लिए शिक्षा, 3. बनने के लिए शिक्षा, 4. साथ-साथ जीने की शिक्षा। इनमें से प्रथम स्तम्भ शैक्षणिक योग्यता को, दूसरा तकनीकी शिक्षा को, तीसरा

स्तम्भ मूल्य शिक्षा को तथा चौथा स्तम्भ आध्यात्मिक शिक्षा को प्रकट करते हैं। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रथम दो स्तम्भों पर खड़ी है। इसको सम्पूर्ण रूप देने के लिए स्कूल तथा कालेज की कक्षाओं के कोर्स के लगभग आधे विषय, मूल्य शिक्षा तथा आध्यात्मिक शिक्षा पर आधारित होने चाहिए। ऐसा नहीं किया जाने के कारण समाज को गहराते मूल्य संकट का सामना करना पड़ रहा है।

गहराता मूल्य संकट

बड़ी विडम्बना की बात है कि विश्व स्तर पर सूचना तथा संचार, सर्जरी, दवाइयाँ आदि अनेक क्षेत्रों में दिन दुगुनी, रात चौगुनी उन्नति हुई है परन्तु इस प्रगति का लाभ विश्व के 40 प्रतिशत से कम लोगों तक ही पहुँचा है। लगभग 60 प्रतिशत लोग ज़रूरत के अनुसार भोजन-पानी, वस्त्र तथा मकान से आज भी वंचित हैं। मूल्यों की कमी के कारण ही अनेक सामाजिक बुराइयाँ भी तेज़ी से बढ़ती जा रही हैं। भ्रष्टाचार भारत में अतुलनीय गति से बढ़ रहा है, औसतन हर 29वें मिनट में बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, हिंसात्मक दुर्घटनाएँ हो रही हैं। प्रकृति

का अत्यधिक दोहन, नारी का शोषण, हर व्यक्ति में भय, चिन्ता तथा असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है।

बढ़ते आर्थिक अपराधों, सामाजिक बुराइयों व जुल्मों का एकमात्र कारण मूल्यों के प्रति अनभिज्ञता तथा जागरूकता का न होना है। मूल्यों के अभाव में व्यक्ति सही-गलत का निर्णय नहीं कर पाते। यदि निर्णय कर भी लेते हैं तो वे मूल्य-विहीन होने के कारण किसी छोटे-मोटे लालच के वश हो ठीक कार्य पर दृढ़ नहीं रह पाते हैं। ऐसे लोग अत्यधिक भौतिकवादी तथा बाह्य प्रभाव में आने के कारण अपनी आंतरिक शक्ति खो बैठते हैं तथा नकारात्मकता के शिकार हो जाते हैं। प्रश्न उठता है कि इन मूल्यों को लोगों में पुनः कैसे आरोपित तथा विकसित किया जाए?

मूल्यों के स्रोत

व्यक्तियों में मूल्यों को आरोपित तथा विकसित करने के लिए इनके स्रोतों को जानना अति आवश्यक बन जाता है। मूल्यों के प्रमुख स्रोत दो हैं – प्रथम है आत्मा, जो किसी संकल्प, बोल व कर्म के गलत या ठीक होने का निर्णय करती है। दूसरे हैं परमपिता परमात्मा, जो सर्व सकारात्मक मूल्यों के एकमात्र स्रोत हैं। उनसे बुद्धियोग लगाने से आत्मा में मूल्यों का समावेश होता जाता है। परमात्मा से बुद्धियोग लगाने को ही राजयोग (मेडिटेशन) कहा जाता है। इसके लिए अपने परम प्यारे पिता परमात्मा को परमधाम में दिव्य, चेतन महाज्योति के समान समझ कर अपने बुद्धि रूपी नेत्र से उन्हें देखना है तथा उनसे दिल की बातें करनी हैं। बुराइयों को छोड़ने तथा आत्मा के मूल गुणों, दिव्य गुणों व ईश्वरीय शक्तियों को धारण करने के संकल्प करते हुए इन्हें चेतन आत्मा में सुबह-शाम विशेष रूप से भरना है। इस दिव्य दृश्य को इमर्ज करने से व्यक्ति के संकल्पों व विचारों का शुद्धिकरण होता जाता है। आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान, भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी तथा पतित से पावन बनती जाती है। एक सिद्धांत है कि जैसा हम सोचते हैं वैसा हम बनते जाते हैं। यह विधि स्वयं परमात्मा शिव ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय

विश्व विद्यालय के माध्यम से बताई है। इस अभ्यास को बच्चे, विद्यार्थी, बड़े व बूढ़े सभी कर सकते हैं।

सुझाव

विद्यार्थी वर्ग अन्य वर्गों की तुलना में सबसे अधिक संवेदनशील, ग्रहणशील तथा उत्साहित होते हैं। इसलिए मूल्य शिक्षा तथा अध्यात्म के विषयों को छठी कक्षा से शिक्षा प्रणाली का अटूट अंग बना दिया जाना चाहिए ताकि आने वाले समय में सभ्य, आदर्श तथा श्रेष्ठ समाज की रचना हो सके। इसे व्यवहारिक रूप देने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से मदद ली जा सकती है। ❖

मेरे प्यारे भारत

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी., गुड़गाँव

सतयुग से कलियुग तक, बस तेरी ही कहानी है।

मेरे प्यारे भारत तेरी सच्ची यही निशानी है।।

सारा विश्व आज भी गाता, तेरी गौरव गाथा है।

विश्व-गुरु की पदवी का, सरताज तू ही कहलाता है।।

सीता, सावित्री, मीरा और लक्ष्मीबाई निराली थी।

तेरी ही माटी पर जन्मी, इनकी गज़ब कहानी थी।।

राम, कृष्ण की इस धरती पर, गाँधी की कुर्बानी थी।

आदर्शों से गढ़ी हुई वो मूरत बड़ी सुहानी थी।।

कला, संस्कृति का तूने विश्व को पाठ पढ़ाया है।

सभ्यता का रोज़ नया अध्याय भी दोहराया है।।

तूने ही माता का भी अद्भुत गौरव पाया है।

तेरी ही माटी में हमने जीवन सफल बनाया है।।

तेरी माटी में खुशबू है, कुर्बानी है वीरों की।

तेरी ही माटी में खाने सोने, चाँदी, हीरों की।।

कल्प-कल्प संगमयुग पर, भगवान स्वयं भी आये हैं।

तेरे ही आँचल में आकर, रत्न ज्ञान के लुटाए हैं।।

तेरी ही खातिर जीवन ये, हमने मन में ठानी है।

मेरे प्यारे भारत तेरी सच्ची यही निशानी है।।



1. गांधीनगर – गुजरात की मुख्यमंत्री बहन आनंदी पटेल को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. कैलाश बहन।
2. विशाखापट्टनम- आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता चंद्रबाबू नायडू को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. शिवलीला बहन।
3. भोपाल- मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. रानी बहन।
4. बैंगलोर- कर्नाटक के मुख्यमंत्री भ्राता के. सिद्धारमैया को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. पद्मा बहन।
5. देहरादून- उत्तराखंड के मुख्यमंत्री भ्राता हरिश रावत को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. मंजू बहन।
6. पटना- बिहार के मुख्यमंत्री भ्राता जीतन राम मांझी को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. संगीता बहन।
7. गुवाहाटी- आसाम के मुख्यमंत्री भ्राता तरुण गोगोई को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. पूनम बहन।
8. इटानगर- अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता नवम तुको को राखी बाँधने के बाद ब्र.कु. जुनु बहन उनके साथ।
9. रांची- झारखंड के मुख्यमंत्री भ्राता हेमंत सोरेन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. निर्मला बहन।
10. चंडीगढ़ - हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह हुंरा को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. उत्तरा बहन।
11. जयपुर (वैशाली नगर)- राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष भ्राता कैलाश मेघवाल को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. सुषमा बहन।
12. नवसारी- गुजरात विधानसभा उपाध्यक्ष मंगू भाई पटेल को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. गीता बहन।



1. काठमांडू – नेपाल के राष्ट्रपति महामहिम भानुप्रसाद राणा को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. राज बहन। 2. दिल्ली (पांडव भवन)- केंद्रीय गृहमंत्री भानुप्रसाद राणा को ईश्वरीय प्रसाद देते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी बहन। 3. लंदन- राजयोगिनी दादी जानकी जी की प्रतिनिधि ब्र.कु. जयन्ती बहन को भारत गौरव लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड प्रदान करते हुए ब्रिटेन की ऊर्जा मंत्री बारानोस वर्मा, ब्रिटिश सांसद भानुप्रसाद शर्मा तथा संस्कृति युवा संस्थान के अध्यक्ष सुरेश मिश्रा। 4. इंदौर (ओमशांति भवन)- लोकसभा अध्यक्ष बहन सुमित्रा महाजन को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. अनिता बहन। 5. ज्ञान सरोवर- 'माइंड-बॉडी-मेडिसिन' विषयक 30वें राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए डॉ. अशोक मेहता, डॉ. निर्मला बहन, डॉ. बनारसी लाल, डॉ. दिलीप गोडे, डॉ. सिब्बन के. कॉल एवं अन्य। 6. नागपुर- केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री भानुप्रसाद राणा को राखी बाँधते हुए ब्र.कु. रजनी बहन।